Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-08
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 17 मई से 23 मई 2017 तक
ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी से ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी सम्वत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

औपचारिकता मात्र से... पृष्ठ- 3

नीम एक स्वास्थ्यवर्द्धक.. पृष्ठ- 4

परब्रह्म श्रीकृष्ण नाम.. पृष्ठ- 5

मुस्लिम शरीयत में... पृष्ठ- 8

अब राजा बनाने का... पृष्ठ- 12

- नियंत्रण से बाहर हो रही है स्थिति
- पाकिस्तान कश्मीर के गिलगिट -बाल्टिस्तान क्षेत्र को ५० वर्ष की 'लीज' (पट्टे) पर चीन को सौंप चुका है!
- पी.ओ.के. सहित सम्पूर्ण कश्मीर हमारा ही है
- बयान पर विवाद या कटु सत्य पर प्रहार

सैनिकों के सिर काटने पर भारत ने पाक उच्चायुक्त को किया तलब

मोदी जी कब तक चुप रहेंगे–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

जम्मू-कश्मीर में भारतीय सेना के दो सुरक्षाकर्मियों के सिर काटे जाने के मुद्दे पर भारत ने पाकिस्तान के उच्चायुक्त अब्दुल बासित को तलब किया है। विदेश मंत्रलय से मिली जानकारी के अनुसार विदेश सचिव एस जयशंकर ने बासित को तलब किया और इस घटना पर भारत की नाराजगी से अवगत कराया। भारत के महानिदेशक सैन्य ऑपरेशन डीजीएमओ लेटिनेंट जनरल एके भट्ट ने अपने पाकिस्तानी समकक्ष को भी शेष पृष्ठ 11 पर

सेना ने किया ब्रह्मोस मिसाइल का दूसरा सफल परीक्षण, घातक हथियारों से मार करने की क्षमता और मजबूत

हिन्दू महासभा ने सेना और वैज्ञानिकों को दी बधाई

● संवाददाता ●

भारतीय सेना ने ३ मई को अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में जमीन पर मार करने वाली ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल के आधुनिक संस्करण का ३ मई को दूसरे दिन सफल परीक्षण किया। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार दक्षिण पश्चिमी कमान सट्राइक वन कोर ने भूमि पर प्रहार करने वाली क्रूज मिसाइल प्रणाली से युक्त अत्याधुनिक ब्रह्मोस का लगातार दूसरे दिन सफल परीक्षण किया। लगातार सफल परीक्षण ने दुर्जेय हथियारों से मार करने की क्षमता को और मजबूत किया है। २ मई को भी इसी स्थान से लंबी–दूरी तक मार करने वाले सामरिक हथियारों का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया था। उन्होंने बताया कि सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों का ये सफलतापूर्वक परीक्षण, मोबाइल टोन मिसाइल लान्चर्स से पूर्ण परिचालन अवस्था में भूमि–से–भूमि पर मार करने वाली मिसाइल के रूप में अपनी पूर्ण क्षमता के साथ किया गया। उच्च स्तर और जटिल युद्धाभ्यासों को आयोजित करते समय कॉपीबुक तरीके से सभी उड़ान मापदंडों को पूरा करते हुए, बहु भूमिका वाली मिसाइल ने भूमि आधारित निर्धारित लक्ष्य पर वांछित सटीकता के साथ सफलतापूर्वक हमला किया। दोनों ही परीक्षणों के दौरान लक्ष्य पर हमले करने के मामले में मिसाइल की सटीकता एक मीटर से भी कम रही। यह लगातार पांचवां मौका है, जब ब्रह्मोस के इस संस्करण का सफलत शेष पृष्ठ 11 पर

'गंगाजल' पीजिए और स्वस्थ रहिए

डॉ. सूरज मृदुल

भारत में इतनी प्राकृतिक सम्पदा हैं, जिसे मनुष्य बराबर उपयोग करता रहा है। इसी के बीच, वह खेलकूद कर पलता है, बढ़ता है एवं बड़ा होता है। फिर वह बड़ा होकर, इसके प्राकृतिक सौंदर्य में खो जाता है। इसमें कुछ चीजें ऐसी भी हैं जो उसके स्वास्थ्य की पूरी तरह देखरेख करती हैं। जिनमें भारत की कई नदियाँ भी हैं। इन सभी नदियों में श्रेष्ठ नदी 'गंगा नदी' है, जो अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। क्योंकि इसके जैसा स्वास्थ्यवर्द्धक, निर्मल, सकून और स्फूर्ति देने वाली नदी का जल, दूसरा विश्व में नहीं है। अर्थात् अपनी इन्हीं असाधारण चीजों के कारण, आज यह विश्व भर में प्रसिद्ध है। तभी तो स्वस्थ रहने के लिए लोग इसके जल को पीते हैं। वैसे यह शुद्ध और पचावटी भी है। इसलिए आज प्रायः यह देखा गया है कि गंगा के किनारे रहने वाला व्यक्ति हमेशा निरोग एवं स्वस्थ होता है। यही नहीं आप अगर, जब गंगा नदी के किनारे, किसी पर्वतीय स्थल पर गए होंगे तो वहाँ १५०–२०० वर्ष से भी ज्यादा उम्र के साधु–संत बैठकर तपस्या कर रहे होते हैं। यह देखकर आप अवश्य आश्चर्य में डूब गए होंगे। ऐसा मात्र 'गंगा नदी' के जल के कारण ही तो आदमी निरोग और उम्रदराज होता है। फिर इसका पानी कभी भी सड़ता नहीं है बल्कि इसमें जितने भी तत्त्व होते हैं, सालों भर पानी में मौजूद रहते हैं। इसके इस महत्त्व को देखकर ही हमारे बुजुर्ग सदियों से इसे पूजने के काम भी लाते रहे हैं। तभी तो इसे अपने बर्तन में रखकर, अपने देवी–देवताओं की मूर्ति एवं तस्वीरों पर, इस जल से उसे पवित्र कर, फूल वगैरह से पूजा करते हैं। इसके अलावा इस जल का विदेश में भी महत्त्वपूर्ण स्थान शुरू हो रहा है, तभी तो एक प्रसंग में विश्वविख्यात लेखक 'शेक्सपीयर' ने अपने शिष्य 'सिकन्दर' से, जो पूरा विश्व जीतने निकला था, उसे 'भारत' से 'गंगा जल' लाने के लिए कहा था।

शुरू से ही इसकी महत्ता काफी रही है तभी तो आप आज प्रायः देखते होंगे कि आपकी कार, बस, ट्रेन या जहाज, जब 'गंगा नदी' के पुल से गुजरती है तब आपके साथ बैठे लोग श्रद्धा से 'जय गंगा मइया' कहकर बोल पड़ते हैं और श्रद्धावश १–२ रुपये का सिक्का भी नदी में डाल देते हैं, जैसे देवी–देवता पर श्रद्धा से लोग पैसा चढ़ाते हैं। आप कहेंगे कि यह एक अनपढ़ी, रूढ़िवादी एवं दकियानूसी बात है। लेकिन यह आप कैसे भूल रहे हैं कि यही तो हमारी भारतीय सभ्यता, संस्कृति है। इन्हीं सभ्यता संस्कृति के कारण तो आज भारत विश्व में महानता का झंडा गाड़े हुए है और हम हैं जो अपनी हीं सुन्दर सभ्यता–संस्कृति को भूल रहे हैं? यह कितने आश्चर्य वाली बात है। लेखक आज गर्व से यह कहना चाहता है कि जिस भारतीय सभ्यता–संस्कृति को अपनाने के लिए आज विश्व चाहता है, कुछ ने इसे अपनाया भी है, जिससे उन्हें काफी सुकून और शान्ति मिली है, इस कारण वह यहीं का होकर रह गया है। वहीं हम दूसरों की अधकचरी सभ्यता–संस्कृति को अपनाने पर तुले हुए हैं। जिसका कोई ठौर–ठिकाना नहीं है कि कब कुकरमुत्तों की तरह उसकी सभ्यता–संस्कृति पनपी? यह कितनी दुखद बात है। इसके साथ–साथ इस जल के और भी कई महत्त्व हैं, जैसे जब कोई आदमी अपना प्राण त्याग रहा होता है एवं उसका शरीर पंच तत्त्वों में विलीन हो रहा होता है, तब लोग उसके मुख में 'गंगा जल' डालते हैं ताकि वह व्यक्ति, इस जल की पवित्रता से, पवित्र होकर, स्वर्ग प्राप्त कर ले अर्थात् उस आदमी को इस जल से पूर्ण रूप से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। ऐसा प्रायः देखा गया है।

आज के विद्वान–वैज्ञानिकों ने यह पूरी तरह से सिद्ध कर दिया है कि 'गंगा जल', आदमी के लिए पूर्ण रूप से स्वास्थ्यवर्द्धक है। यह जल पेट के सारे 'कीड़े–मकोड़े' मारकर उसे एक नई स्फूर्ति देता है। वैसे लोग 'कुंभ' के समय में, यह अनुभव अवश्य कर चुके होते हैं, जब इसमें नहा–धोकर एवं पानी पीकर निकलते हैं तब उस समय इनका तनमन खिल उठता है अर्थात् उनका चित, इस समय बिलकुल प्रसन्न रहता है, जिसका अर्थ है कि स्वस्थ होना। आज का कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो रोगी हो और प्रसन्न रहता हो? अर्थात् यह तभी संभव है जब आदमी पूरी तरह से स्वस्थ है, तभी प्रसन्न होता है। इसका कारण यह है कि गंगा, जब भगवान

शेष पृष्ठ 10 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह कुछ लोगों की जिन्दगी में आपाधापी की स्थितियां बनी रहेगी। बेवजह कुछ समस्याओ का सामना करना पड़ सकता है। परिजन ही आपके प्रबल विरोधी साबित होगें। जो आपके कार्यो पर पानी फेरने का काम करेंगे। उच्चअधिकारियों व पड़ोसियों से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

वृष - इस सप्ताह आप किसी अनहोनी के घटने की आशंका की वजह से डरे व सहमे नजर आयेंगे। मन पर काबू पायें एवं अध्यात्मिक मन को जाग्रत करें। सब ठीक हो जायेगा। अनुबन्ध के द्वारा किये गये कार्यो में सफलता हासिल होगी। सामाजिक मान–सम्मान में वृद्धि होगी।

मिथुन - इस सप्ताह आप काफी प्रयासों के बावजूद ही महत्वपूर्ण लोगों से मिल पायेंगे। धन के मामलें में बाधायें आयेंगी एंव सम्बन्धों में तकरार की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार की और से सहयोग का प्रस्ताव मिलता रहेगा किन्तु आप ही उसे स्वीकार करना उचित नहीं समझेंगे।

कर्क - इस सप्ताह आपके व्यक्तित्व में अप्रत्याशित सुधार होगा जिसे लोग देखकर दंग रह जायेंगे। समय और समाज के अनुकूल चलने पर व्यक्ति गतिवान होता है और प्रतिकूल होने पर पिछड़ जाता है। जीवन का उद्देश्य ढूढने में अभी थोड़ा वक्त लग सकता है।

सिंह - इस सप्ताह आप धन तथा कैरियर के क्षेत्र में पूरी लगन से जुटेंगे। साहस धैर्य तथा कुशलता के बल पर आप–अपने मुकाम हासिल करेंगे। सम्बन्धों में समझौता करना ही बुद्धिमानी है। साहसिक निर्णय लेने से आप हिचकिचायेंगे।

कन्या - इस सप्ताह स्वंय को पहचानने की जरूरत है, तभी आप–अपना बेहतर दे पायेंगे। निरंतर प्रयास से सोंचे गये लक्ष्य शीघ्र ही प्राप्त होते है। खोया हुआ जुझारूपन वापस लौट आयेगा। जटिल कार्यो को करने में आप पीछे नहीं हटेंगे।

तुला - इस सप्ताह किसी को भी झूठे आश्वासन न दें, अन्यथा आप की छवि खराब होने के आसार नजर नजर आ रहें है। आप–अपने परिवार के प्रति विशेष ध्यान दें तभी आप मानसिक रूप से स्वस्थ रह पायेंगे। सम्बन्धों की कद्र करने से ही रिश्तों में मजबूती आयेगी। इस समय आर्थिक लेन–देन में सावधानी बरतनें की आवश्यकता है।

वृश्चिक - इस सप्ताह कुछ लोगों को परिश्रम निरन्तर करना पड़ेगा जिसे आप टालना चाहे तो भी टाल नहीं सकते है। सुनियोजित तरीके से किये गये कार्यो में आप सफल होंगे। कुछ लोगों का संस्थाओं से अनुबन्ध करने के अवसर उपलब्ध होंगे।

धनु - इस सप्ताह घर व ऑफिस में सामंजस्य बिठा पाने में आप अक्षम रहेंगे। जिसके कारण कई समस्यायें उत्पन्न हो सकती है। इस सप्ताह आपके पास कोई ऐसा प्रस्ताव आयेगा जिसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त शुभ रहेंगे। कुछ लोगों को नीदं कम आने की शिकायत बनी रह सकती है।

मकर - इस सप्ताह नये लोगों को रोजी व रोजगार के अवसर उपलब्ध होने की सम्भावना है जिससे उनकी मानसिक दशा कुछ अच्छी रहेगी। आपका हर कदम महत्वपूर्ण है इसलिए जो भी करें सोच–समझकर ही करें तो बेहतर रहेगा।

कुम्भ - इस सप्ताह चिन्तन, काम, क्रोध, लोभ अहंकार आदि शब्दों से ऐसा लगता है कि आप बहुत बीमारियों से घिरे हुए हैं। जिन्दगी के प्रति उदासीन रहना भी इन बीमारियों का एक कारण जिसे आप आसानी से दूर भी कर सकते हैं।

मीन - आपकी असमंजस वाली स्थिति इस सप्ताह आपको मुसीबत में डाल सकती है, अतः इस पर नियन्त्रण करने का प्रयास करें। मित्रों के साथ अत्यधिक समय न बितायें अन्यथा आपके वैवाहिक जीबन में तनाव उत्पन्न होने की आशंका है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्‌भगवत गीता

मृत्यु सर्वहरश्राहमुदवश्रच भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।।

मैं सबका नाश करने वाला मृत्यु और उत्पन्न होने वालों का उत्पत्ति–हेतु हूँ तथा स्त्रियों में कीर्ति श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा हूँ।।३४।।

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।।

तथा गायन करने योग्य श्रुतियों में मैं बृत्सिाम और छन्दों में गायत्री छन्द हूँ तथा महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त मैं हूँ।।३५।।

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्।।

मैं छल करने वालों में जूआ और प्रभावशाली पुरुषों का प्रभाव हूँ। मैं जीतने वालों का विजय हूँ, निश्चय करने वालों का निश्चय और सात्त्विक पुरुषों का सात्त्विकभाव हूँ।।३६।।

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।।

वृष्णिवंशियों में वासुदेव अर्थात् मैं स्वयं तेरा सखा, पाण्डवों में धनंजय अर्थात् तू मुनियों में वेदव्यास और कवियों में शुक्राचार्य कवि भी मैं ही हूँ।।३७।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 17 मई से 23 मई 2017 तक

अध्यक्षीय

नियंत्रण से बाहर हो रही है स्थिति

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

जम्मू-कश्मीर में बिगड़ते हालात पर काबू पाने की एक कोशिश होती नहीं कि नयी चिंता, नए सवालों के साथ प्रकट हो जाती है। अभी मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से मिलकर चर्चा की कि कैसे अलगाव और हिंसा की घटनाओं को रोका जाए, कैसे पत्थरबाजी पर नियंत्रण पाया जाए। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के तरीकों को आगे बढ़ाने की बात कही। अलगाववादियों से बातचीत की बात कही। इस बीच राज्य में इंटरनेट सेवा पर प्रतिबंध लगा दिया गया और स्कूल–कालेज भी बंद हैं। यह तमाम कवायद इसलिए कि प्रदेश में बढ़ते तनाव को नियंत्रित करने का थोड़ा अवसर सरकार और प्रशासन को मिल सके। लेकिन ये सारे कदम निष्फल साबित हो रहे हैं। गुरुवार सुबह जम्मू–कश्मीर में एक और आतंकी हमला हो गया। कुपवाड़ा में आतंकवादियों ने सीमा के पास स्थित सैन्य शिविर पर आत्मघाती हमला किया जिसमें भारत के तीन जवान शहीद हो गए हैं, सेना ने जवाबी कार्रवाई में दो आतंकियों को मार गिराया गया है। सेना के मुताबिक अंधेरे का फायदा उठाकर आतंकियों ने यह सरप्राइज अटैक किया है। सूत्रों का कहना है कि इस वक्त लगभग १५० आतंकवादी घाटी में घुसपैठ के लिए इंतजार में हैं और इस हमले के जरिए भारतीय सेना का ध्यान भटका कर सीमा पार से घुसपैठ करने की साजिश रची जा रही है। हालांकि कश्मीर घाटी में सुरक्षा के लिए जिम्मेदार श्रीनगर स्थित १५वीं कोर के कमांडर लेटिनेंट जनरल जे एस संधू के मुताबिक सेना मुस्तैद है और आतंकवादियों के घुसपैठ के इस प्रयास को विफल कर दिया जाएगा। लेटिनेंट संधू ने कहा कि नियंत्रण रेखा के पार पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से घुसपैठ पिछले वर्ष के मुकाबले इस वर्ष कम रही है, इस बार बर्फ ने भी हमारी मदद की है। अधिक बर्फबारी होने से आतंकवादियों को घुसपैठ करने में मुश्किल हो गई है। सेना का यह कथन ढांढस बंधाता है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन पिछले साल के उड़ी हमले जैसी घटना को दोबारा अंजाम देने में आतंकी अगर सफल रहे हैं तो यह केंद्र सरकार के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। उड़ी हमले के बाद से ही सर्जिकल स्ट्राइक का ढोल खूब पीटा गया था, मानो हमने ऐसा करके पाकिस्तान को चारों खाने चित्त कर दिया है और अब उसकी ओर से कोई साजिश नहींहोगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ६ अप्रैल को हुए उपचुनावों में भरपूर हिंसा हुई, जिसमें ८ लोग मारे गए। उसके बाद से समूची घाटी में तनाव पसरा हुआ है। अभी २४ अप्रैल को ही पुलवामा जिले में पीडीपी के एक जिलाध्यक्ष अब्दुल गनी डार की आतंकियों ने हत्या कर दी, उससे पहले१७ अप्रैल को आतंकियों ने नेशनल कान्फ्रेंस से जुड़े एक वकील की शोपियां जिले में हत्या कर दी थी। इस वर्ष २६ मार्च को कुलगाम में आतंकी हमला हुआ था। इसमें सीआरपीएफ कैंप पर गोलियां बरसाई गई थीं, २३ फरवरी को शोपियां में सेना की पैट्रोलिंग पार्टी पर हुए आतंकी हमले में ३ जवान शहीद हो गए थे और फरवरी में ही हंदवाड़ा में आतंकियों से साथ हुए एनकाउंटर में एक मेजर सतीश दहिया और ३ जवान शहीद हो गए थे। हथियारों से हमलों के अलावा अब आतंकी नयी तकनीकी का इस्तेमाल भी आतंक फैलाने के लिए कर रहे हैं। बीते दिनों सोशल मीडिया पर आतंकियों का एक वीडियो काफी वायरल रहा है, इसमें ३० से अधिक आतंकवादी सेना की वर्दी में हथियार लिए दिखाई दे रहे हैं। आतंकवादी बुलेट प्रूफ जैकेट पहने हुए हैं, उनके हाथों में एके–४७ है। आतंकियों का यह वीडियो दक्षिणी कश्मीर के किसी जगह पर बनाया गया है। बताया गया है कि आतंकियों ने ये वीडियो सोशल मीडिया पर एक एजेंडे के तहत शेयर किया है। वीडियो जारी करने का मकसद दक्षिण कश्मीर में अपनी मौजूदगी दिखाना है। हैरान करने वाली बात ये भी है कि पिछले २० सालों में पहली बार ऐसा देखने में आया है जब इतनी संख्या में आतंकी एक साथ नजर आए हैं। घाटी में व्याप्त तनाव के बीच इतने आतंकियों का एक साथ नजर आना सुरक्षाबलों के लिए चिंता का विषय बन गया है। राजनेताओं से लेकर सैन्य बलों पर हमले, सोशल मीडिया के जरिए खौफ का प्रसार और नौजवानों को बरगलाना, हाल फिलहाल की ये घटनाएं यह बताती हैं कि जम्मू–कश्मीर में स्थिति सुधारने की जो कोशिशें सरकार की ओर से की जा रही हैं, वे कारगर नहीं हैं और अब दूसरे विकल्पों पर भी गौर फरमाना होगा, भले वे केंद्र और राज्य सरकार की राजनीति के अनुकूल न हों।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

औपचारिकता मात्र से नहीं होगा सुधार

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

दुनिया भर में प्रतिवर्ष १ मई को मजदूर दिवस अथवा अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसे मई दिवस भी कहा जाता है। मई दिवस समाज के उस वर्ग के नाम किया गया है, जिसके कंधों पर सही मायनों में विश्व की उन्नति का दारोमदार है। इसमें कोई दो राय नहीं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं राष्ट्रीय हितों को पूरा करने का प्रमुख भार इसी वर्ग के कंधों पर होता है। यह मजदूर वर्ग ही है, जो हाड़ तोड़ मेहनत के बलबूते पर राष्ट्र के प्रगति चक्र को तेजी से घुमाता है लेकिन कर्म को ही पूजा समझने वाला श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। मई दिवस के अवसर पर देशभर में बड़ी–बड़ी सभाएं होती हैं, बड़े–बड़े सेमीनार आयोजित किए जाते हैं, जिनमें मजदूरों के हितों की बड़ी–बड़ी योजनाएं बनती हैं और ढेर सारे लुभावने वायदे किए जाते हैं। जिन्हें देख सुनकर एक बार तो यही लगता है कि मजदूरों के लिए अब कोई समस्या ही बाकी नहीं रहेगी। लोग इन खोखली घोषणाओं पर तालियां पीटकर अपने घर लौट जाते हैं किन्तु अगले ही दिन मजदूरों को पुन उसी माहौल से रूबरू होना पड़ता है, फिर वही शोषण, अपमान व जिल्लत भरा तथा गुलामी जैसा जीवन जीने के लिए अभिशप्त होना पड़ता है। मजदूरों के आत्म सम्मान का दिवस कहे जाने वाले इस दिन को लेकर इस तबके में कोई खास उत्साह, जोश और जुनून नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों को उत्साह से दूर कर दिया है। मसलन अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ रस्म बनकर रह गया है। आलम यह है कि दो जून की रोटी, एक अदद छत और बच्चों के सुनहरे भविष्य के सपने संजोकर पराए प्रदेश में आकर हाड–तोड मेहनत करने के बावजूद तिल–तिल सिसकती जिंदगी जी रहे इन मेहनतकश मजदूरों के लिए अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस जैसे आयोजन कोई मायने नहीं रखते। मेहनतकश मजदूरों को उचित पारिश्रमिक दिलाने और उनके आर्थिक, सामाजिक हक दिलाने व उनके योगदान को मान्यता देने के लिए पूरी दुनिया में हर साल पहली मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है, लेकिन वैश्वीकरण और मुनाफे की अंधी दौड़ में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। प्रतिदिन आठ घंटे और सप्ताह में ४० घंटे कामकाज, उचित पारिश्रमिक और बेहतर माहौल जैसी मांगों को लेकर शुरू हुआ मजदूरों का संघर्ष आज भी जारी है। यही वजह रही है कि मजदूर दिवस जैसे आयोजन अब इस तबके को बेमानी से लगने लगे हैं। फिर कैसा मजदूर दिवस, किसका मजदूर दिवस। दिन रात रोज़ी–रोटी के जुगाड़ में जद्दोजहद करने वाले मजदूर के लिए पेट और परिवार की मजबूरी में हर दिवस छोटा होता है। उसे तो दो जून की रोटी मिल जाए मानो सब कुछ मिल गया। आजादी के इतने साल में भले ही बहुत कुछ बदला हो, लेकिन मजदूरों के हालात नहीं बदले तो फिर कैसे मनायें मजदूर दिवस। कैसे बदले हाल कैसे बदले दशा और दिशा। मजदूरों का ना सामाजिक स्तर बदला, ना शिक्षा का स्तर बदला, जिंदगी कल और आज इसी ढर्रे पर चल रही है। ड क्टर का बेटा डॉक्टर, वकील का बेटा वकील सिपाही का बेटा सिपाही तो क्या मजदूर के बच्चे मजदूर ही रहेंगे। रोटी, कपड़ा और मकान के लिए जूझते इस श्रमिक वर्ग के लिए इस मजदूर दिवस की कितनी उपयोगिता है इसे समझना बहुत मुश्किल नहीं है और यह भी स्पष्ट है कि पूंजीवादी बाजार और सत्ता इस मजदूर दिवस को कितना महत्व देते हैं। देश का शायद ही ऐसा कोई हिस्सा हो जहां मजदूरों का खुलेआम शोषण न होता हो। आज भी स्वतंत्र भारत में बंधुआ मजदूरों की बहुत बड़ी तादाद है। कोई ऐसे मजदूरों से पूछकर देखे कि उनके लिए देश की आजादी के क्या मायने हैं। जिन्हें अपनी मर्ज़ी से अपना जीवन जीने का ही अधिकार न हो, जो दिनभर की हाड़तोड़ मेहनत के बाद भी अपने परिवार का पेट भरने में सक्षम न हो पाते हों, उनके लिए क्या आजादी और क्या गुलामी। सबसे बदतर स्थिति तो बाल एवं महिला श्रमिकों की है। बच्चों व महिला श्रमिकों का आर्थिक रूप से तो शोषण होता ही है, उनका शारीरिक रूप से भी जमकर शोषण किया जाता है, लेकिन अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए चुपचाप सब कुछ सहते रहना इन बेचारों की जैसे नियति ही बन जाती है। महात्मा गांधी ने कहा था कि किसी देश की तरक्की उस देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है। जो मजदूरों, कामगारों और किसानों की बेहतरी, भलाई और विकास, अमन और कानूनी व्यवस्था बनाए रखने के लिए वचनबद्ध होते हैं। हमारे अध्यात्मिक दर्शन द्वारा प्रवर्तित जीवनशैली पर दृष्टिपात करें तो उसमें पूंजीपति, मजदूर और गरीब अमीर को आपस में सामंजस्य स्थापित करने का सन्देश है। भारत में एक समय संगठित और अनुशासित समाज था जो कालांतर में बिखर गया। इस समाज में अमीर और गरीब में सामाजिक तौर से कोई अन्तर नहीं था।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

नीम एक स्वास्थ्यवर्द्धक औषधि है

✍ डॉ. सूरज

मनुष्य जब से इस धरती पर आया है, तब से आज तक किसी न किसी तरह का अनुसंधान करता ही रहा है। चाहे वह अनुसंधान विज्ञान में हो या आध्यात्म में हो या आयुर्वेद में हो या अन्य क्षेत्र में हो। मनुष्य के आयुर्वेद का क्षेत्र बहुत पुराना और विकसित रहा है। यही कारण है कि आज मानव के पास इसका बहुत बड़ा बहुमूल्य भंडार है। तभी तो इन जड़ी-बूटियों से भारत विश्व में आयुर्वेद के क्षेत्र में एकाधिकार प्राप्त किए बैठा है। जैसे-नीम, पान, केसर, लौंग, इलायची तथा असंख्य फल-फूल एवं पत्तियाँ आदि। अन्य जड़ी-बूटियों को छोड़कर सिर्फ नीम के महत्त्व को परखा जाए। नीम का पेड़ प्रायः हर घर के करीब मिल जाता है। यही नहीं इसका पेड़ श्मशान घाट में भी लगा होता है। जहाँ शव से उठने वाला दुर्गन्ध वातावरण को पूर्ण रूप से शुद्ध कर देती है। अर्थात् आज यह मानव जाति के लिए हर रूप में उपयोगी सिद्ध हो चुका है। जिसका कुछ उदाहरण आप स्वयं देख सकते हैं।

नीम की छोटी-छोटी टहनियों को तोड़कर लोग उससे सुबहस की बेला में अपना हाथ-मुँह धोते हैं। जिस कारण मुँह का जितना रोग-विकार तथा कीड़ा-मकोड़ा होता है, वह सब इसके तेज विषैले रस से खत्म हो जाता है। यही

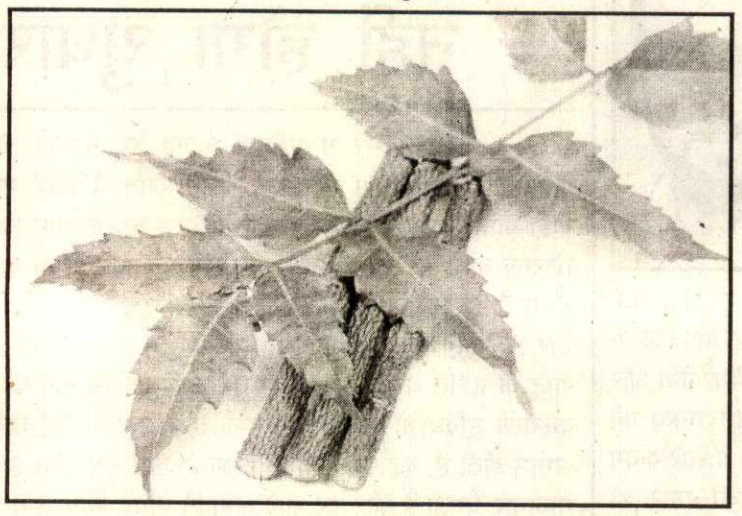

नहीं दुनिया में आज कैंसर एक असाध्य रोग साबित हो चुका है। जिस कारण प्रतिवर्ष विश्व में हजारों लाखों आदमी मर रहे हैं। फिर भी आज तक इस रोग के लिए कोई दवाई नहीं बन पाई है। इस हालत में नीम के पेड़ की छाल को पीसकर उसे थोड़ा-थोड़ा लेकर, एक गिलास शर्बत के रूप में या नीम का तेल सवा चम्मच, सुबह-शाम, एक से दो महीना नियमित सेवन करने से इसके सारे कीड़े मर जाते हैं और रोगी तुरंत निरोग हो जाता है।

इससे बने मलहम, घाव को सुखाने एवं उसे भरने में, काफी मदद करता है। जबकि घाव को भरने के लिए कई कीमती एवं दुर्लभ दवाई का उपयोग लोग करते हैं। तब भी घाव इतना जल्दी असर नहीं पैदा होता है। आज अन्न की कीमत कितनी बढ़ गई है। यह किसी से छुपी हुई नहीं है। इसलिए इसकी सुरक्षा करना अत्यन्त जरूरी हो गया है। इस कारण चावल, गेहूँ, दाल आदि अन्न को सुरक्षित करके रखने के लिए इसमें नीम का पत्ता रखते हैं। जिससे घुन अथवा कीड़ा-मकोड़ा न लगता है और न अन्य चीज इसे खराब करती है। इसलिए यह पूर्ण रूप से सुरक्षित रहता है। आप इस महंगाई के जमाने में अपने अन्न को चूहे तथा कीड़े-मकोड़ों से बचाकर नहीं रखते हैं तो आपके परिवार के महीने भर का बजट गड़बड़ा जाता है। क्योंकि असावधानी से अन्न रखा होने के कारण कीड़े-मकोड़े और चूहे आदि जीव-जन्तु उसे कुतर देंगे। इसलिए इनसे बचाने के लिए नितान्त आवश्यक है कि इसकी सुरक्षा करना।

अन्न की तरह, आज कपड़ा भी महंगा हो गया है। आज के युग में आदमी के लिए रोटी, कपड़ा और मकान, अत्यन्त आवश्यक चीजे बन गई हैं। इस कारण आदमी के पास जो भी कपड़ा है उसे सुरक्षा करना बहुत जरूरी है। इस हालत में कपड़ों में नीम का पत्ता सुखाकर रखा जाता है। जिससे वह कपड़ा कई साल तक बिल्कुल सुरक्षित बना रहता है। जबकि आजकल लोग 'फिनाइल' की गोली का उपयोग करते हैं। इससे कपड़ा सुरक्षित तो अवश्य होता है लेकिन कपड़ों में एक तीखी गंध आ जाती है। पर नीम के पत्तों में कोई गंध नहीं होती। इन सबों के अलावा जब भी आपके शरीर में दर्द होता है या आपकी त्वचा रूखी-रूखी हो जाती है, उस हालत में आप गुनगुने पानी में इसके पत्ते को रख छोड़िए और थोड़ी देर के बाद इससे स्नान कर लीजिए। फिर देखिए आपका मन-मस्तिष्क कितना खुश होकर खिल उठता है। लेखक के एक पड़ोसी महेश बाबू हैं। इनकी एक बच्ची एक बार बीमार पड़ गई। तब महेश बाबू इधर-उधर जहाँ तक हो सकता था, वह किया। उनकी बच्ची की तबियत में कोई सुधार नहीं हुआ। तब एक दिन एक वैद्य ने इस बच्ची को बुरी स्थिति में देखकर महेश बाबू को प्रतिदिन प्रातःकाल नीम की पत्तियों का रस पिलाने को कहा। महेश बाबू अब तक बिल्कुल निराश हो चुके थे। फिर भी ये यों ही अपनी बच्ची को नीम की पत्तियों का रस पिलाने लगे। हालाँकि वह अब तक सैकड़ों जगह जा-जाकर अपनी बेटी को दिखला-दिखला कर परेशान हो गए थे। फिर भी सफलता उन्हें प्राप्त नहीं हुई थी। इसलिए उन्हें अब भी विश्वास नहीं था कि उनकी बच्ची में कोई सुधार आएगा। लेकिन आश्चर्य का ठिकाना तब न रहा जब उनकी लड़की में सुधार के चिह्न कुछ ही दिनों के बाद धीरे-धीरे दिखने लगे थे। और एक दिन उनकी बच्ची पूर्ण रूप से ठीक होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने लगी थी। अब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है। तब ही महेश बाबू इस नीम के महत्त्व को जान गए थे।

'हल्दी के गुण'

✍ डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य

हमारे घरों में आसानी से प्राप्त होने वाली सर्वसुलभ एक ऐसी चीज है जो सभी के रसोई घरों में पाई जाती है और उसका एक अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है और वो चीज है 'हल्दी'। इसे अंग्रेजी में टरमरिक और बांगला में होलूद कहते हैं। यूँ तो सब्जियों, दालों इत्यादि विभिन्न खाद्य पदार्थों में इसका प्रयोग महिलाएँ करती हैं और घर से लेकर बड़े-बड़े होटलों तक में इसका उपयोग खान-पान में होता है। लेकिन इसके औषधीय गुण भी सर्वविदित हैं जो कि पुरातन काल से दादी नानी के नुस्खों में आजमाया चला आ रहा है। हल्दी हमारे जिस्म की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है साथ ही संक्रमण का भी मुकाबला करती है। रोगों के उपचार हेतु यह बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

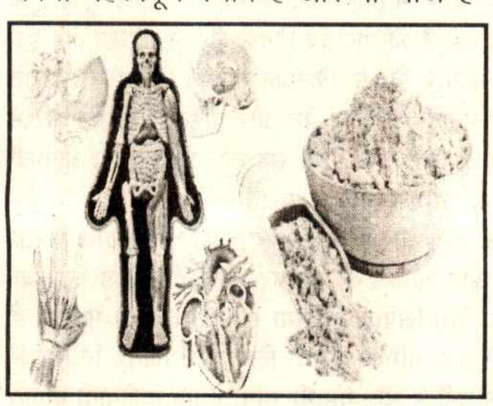

१. **बुखार में :** ठंड लगकर बुखार आने पर एक गिलास गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी का पाउडर एक चुटकी काली मिर्च मिलाकर पीने से बुखार बहुत शीघ्र ठीक हो जाता है।

२. **बच्चों के सूखा रोग :** सूखा रोग से पीड़ित बच्चा दिन-प्रतिदिन सूखता ही चला जाता है, अतः इस रोग से बचाव हेतु हल्दी की गाँठ को चूने के पानी में लगभग आठ दिन डुबाकर रखने के पश्चात इसे निकालकर फिर से ताजे चूने के पानी में घुटाई करके दो-दो बार रत्ती की गोलियाँ बनाकर रख लेना चाहिए। इसके बाद यही गोली दिन में दो बार एक-एक गोली सुबह-शाम दूध के साथ सूखा रोग बच्चे को खिलाएँ। बच्चे के हड्डियों में मजबूती आएगी और सूखा रोग भी ठीक हो जाएगा।

३. **हड्डी टूटने पर :** मरीज को प्लास्टर लगा हो इसके साथ ही हल्दी को पीसकर अर्थात इसका पाउडर दूध में घोलकर रेगुलर पीने से हड्डी शीघ्र ही जुड़ने लगती है।

४. **बिजली के करंट लगने पर :** रोगी अगर होश में हो तो हल्दीयुक्त गर्म दूध पिलाने से उसे अन्दरूनी रूप से काफी शक्ति मिलती है। साथ ही हल्दी शरीर के अन्दरूनी क्षतिग्रस्त हिस्से को शीघ्र ही भरने का काम करती है।

५. **पथरी :** इस रोग से पीड़ित व्यक्ति का सर्वप्रथम थोड़ा सा गुड़ एवं लगभग आधा चम्मच पिसी हल्दी इसे एक गिलास मठा (छाछ) में अच्छे से घोलकर पिलाने से इस रोग में काफी आराम मिलता है।

६. **दाँतों के कष्ट में :** अल्प मात्रा में नमक ऐसी ही खुराक में पिसी हल्दी एवं जरा सा सरसों का तेल इन तीनों का मिश्रण बनाकर दाँतों और मसूड़ों पर टूथब्रश से ब्रश को इससे काफी राहत मिलेगी। हल्दी के गुणों की बात जब हम यहाँ कर रहे हैं तो इसी तारतम्य में उत्तर प्रदेश के कानपुर से हिन्दी मासिक मेडिकल संदेश के यहाँ अवश्य करना चाहूँगा जिसका शीर्षक था 'अब गुणकारी हल्दी से हो सकेगा कैंसर का इलाज'।

लेख के अनुसार भारतीय वैज्ञानिक को हल्दी से कैंसर का कारगर इलाज खोजने में बड़ी कामयाबी मिली है। मध्य प्रदेश के कारगर विश्वविद्यालय ने हल्दी के औषधीय गुणों से प्रेरित होकर कैंसर निरोधी अणुओं के खोज का दावा किया है। जो जानलेवा कैंसर से प्रभावी ढंग से लड़ने में मददगार साबित होंगे। इस सफलता को कैंसर के इलाज की दिशा में क्रांतिकारी खोज माना जा रहा है।

भोपाल स्थित राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रोफेसर पीयूष त्रिवेदी और उनके डॉक्टरेट छात्र डॉ. सी. कार्तिकेय ने बताया कि विश्वविद्यालय ने कैंसर निरोधी नए मालिक्यूलस (अणुओं) कोड की खोज पर अमेरिकी पेटेन्ट के लिए आवेदन किया है। इन अणुओं को सीटीआर-१७ और सीटीआर-२० नाम दिया गया है।

परब्रह्म श्रीकृष्ण नाम के विभिन्न अर्थ

श्री लाल शर्मा

विविध स्वरूप—परमात्मा जो निर्गुण निराकार सच्चिदानन्द स्वरूप है, वह एक अद्वितीय, गुणातीत, क्रिया, आकार, विकार, विशेषण, धर्म, विरहित केवल शुद्ध चिन्मय निर्विशेष है। उसी परमात्मा का दूसरा रूप सगुण है। सगुण स्वरूप परमात्मा के दो भेद हैं— **(१) निराकार (२) साकार।** वे सगुण निराकार परमात्मा अद्वितीय, सर्वत्र परिपूर्ण, मंगल स्वरूप, सच्चिदानन्दघन हैं तथा क्षमा, दया, शान्त, ज्ञान आदि अनन्त दिव्यगुणों से सम्पन्न हैं। परमात्मा का जो दिव्यगुणों से सम्पन्न सगुण साकार स्वरूप है, वह चिन्मय है। वे ही अनन्त दिव्यगुणों से युक्त भगवान अपनी प्रकृति को स्वीकार करके श्रीकृष्ण के सगुण साकार रूप में प्रकट होते हैं। अर्थात् अवतार लेते हैं।

अवतार भेद — अवतार का अर्थ है—अवतरण, परब्रह्म का उतरना, भगवान सर्वमय, सर्वातीत, सर्वव्यापक और सदा सर्वत्र विद्यमान हैं, परन्तु उन्होंने अपनी योगमाया से स्वयं को ढक रखा है। स्वेच्छा से अपनी लीला करने के लिये कभी—कभी वे इस आवरण को हटाकर धराधाम में प्रकट हो जाते हैं, यही उनका अवतार लेना है।

गर्ग संहिता के अवतारों के मुख्य छह भेद हैं—(१) **अंशावतार**— असंख्य ब्रह्माण्डों के अधिपति वे प्रभु गोलोक धाम में विराजते हैं। जो भगवान के दिये सृष्टि आदि कार्यमात्र के अधिकार का पालन करते हैं, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि अंशावतार हैं। (२) अंशावतार जो इन अंशों के कार्य में हाथ बटाते हैं वे अंशावतार कहे जाते हैं, जैसे—मरीचि आदि। (३) **आवेशावतार** — भगवान जिनके अन्तःकरण में आविष्ट हो, अभीष्ट कार्य का सम्पादन करके फिर अलग हो जाते हैं, ऐसे अवतारों को आवेशावतार कहते हैं। जैसे परशुराम। (४) **कलावतार** — जो प्रत्येक युग में प्रकट हो, युग धर्म को जानकर उसकी स्थापना करके पुनः अन्तर्धान हो जाते हैं, भगवान के उन अवतारों को कलावतार कहा जाता है जैसे कपिल, कूर्म। (५) **पूर्णावतार** — जहाँ चार व्यूह प्रकट हों, जैसे—श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न एवं वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध तथा जहाँ नौ रसों की अभिव्यक्ति देखी जाती हो एवं जहाँ बल—पराक्रम की भी पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होती हो, भगवान के उस अवतार को पूर्णावतार कहा गया है। (६) **परिपूर्णतम अवतार** — जिसके अपने तेज में 'अन्य सम्पूर्ण तेज' विलीन हो जाते हैं, भगवान के उस अवतार को श्रेष्ठ विद्वान पुरुष परिपूर्णतम् अवतार बताते हैं। नृसिंह, राम श्वेत द्वीपाधिपति हरि वैकुण्ठ, यज्ञ और नर—नारायण ये पूर्णावतार हैं एवं साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण परिपूर्णतम अवतार हैं।

कृष्णस्तु भगवान स्वयम्।
कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम्।।
(कृष्णोपनिषद्)

भक्ति साधना—भक्ति मार्ग के पथिकों के लिये भक्ति साधना के चार मुख्य पदार्थ हैं—भगवान के दिव्य नाम, रूप, लीला और धाम। उनके गुण, प्रभाव, तत्त्व और रहस्य—इन चारों को विशेष रूप से समझना चाहिये और साधन धाम तथा मोक्ष के द्वार मानव देह में प्राप्त कान, नेत्र, मन और वाणी इन चारों द्वारों से इन चारों पदार्थो का अधिकाधिक सेवन करना चाहिये।

श्रीकृष्ण नाम का अर्थ—भगवान श्रीकृष्ण के असंख्य नाम हैं। गोपाल सहस्रनाम और विष्णु सहस्रनाम में हजार—हजार नाम लिखे हैं तथा श्रीमद्भगवद्गीता में भी इनको चालीस नाम से सम्बोधित किया गया। परन्तु यहाँ पर केवल श्रीकृष्ण नाम पर ही यत्किंचित निवेदन किया जा रहा है।

(१) भगवान श्रीकृष्ण के शरीर का रंग श्याम होने के कारण ही श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध के अध्याय ८ के १३वें श्लोक में इनका नामकरण करते हुए श्री गर्गाचार्य जी ने कहा है—यह जो सांवला—सांवला है, यह प्रत्येक युग में शरीर ग्रहण करता है। पिछले युग में इसने क्रमशः श्वेत, रक्त और पीत तीन विभिन्न रंग स्वीकार किये थे। अब यह कृष्ण वर्ण हुआ है। इसलिये इसका नाम 'कृष्ण' होगा। सतयुग, त्रेता और द्वापर में क्रमशः श्वेत, रक्त, पीत वर्ण रहा है।

(२) कुछ लोग इसका ऐसा अर्थ करते हैं कि— कर्षति इति कृष्णः। जो लोगों के चित्तरूपी भूमि का कर्षण करके उनमें प्रेम की खेती करता है उसका नाम 'कृष्ण' है। श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय—१/३१) में अर्जुन ने भगवान को कृष्ण कहकर पुकारा है। कृष्ण ऐसे शब्द के प्रयोग करने से अर्जुन के अनेक आन्तरिक अभिप्राय हैं।

प्रथम तो यह कि 'कर्षत्यरीन् महाप्रभाव शक्त्या' जो शत्रुओं को अपनी शक्ति के महान प्रभाव से अपनी ओर खींच अपने वश करे उसे कहिये 'कृष्ण' सो हे कृष्ण! तुम हमारे बन्धुवर्गो के हृदय से शत्रुभाव खींचकर अपने वश कर लो। जिससे वे हमारे अधीन होकर हम से सन्धि कर हमारा राज्य हमको लौटा देवें।

दूसरा तात्पर्य यह है कि 'कर्षत्यात्मसात् करोत्यांनन्दत्वेन परिजयेमतीति मनो भक्तानाम्'।। जो भक्तों के मन को खींचकर अपने समान आनन्द स्वरूप कर डालता है, उसे कहिये 'कृष्ण'। सो हे कृष्ण! बन्धुवर्गो के शोक से व्याकुल मुझ दीन अर्जुन के मन को अपने स्वरूप की ओर खींचकर अपने समान आनन्दमय कर दो। और इस युद्ध का बखेड़ा मिटाओ।

तीसरा अभिप्राय यह है कि 'कर्षति सर्व्वान् स्वकुक्षौ प्रलयकाले।' जो प्रलय काल के समय सबको अपने उदर में खींच ले उसे कहिये 'कृष्ण'। सो हे कृष्ण! यदि तुम्हारी इच्छा प्रलयकाल कर डालने की है तो शीघ्रता करो। हम पाण्डव और कौरवों को खींचकर अपने उदर में कर लो। जिससे शीघ्र यह सारा बखेड़ा मिट जाये।

चौथा अभिप्राय यह है कि 'कर्षति भक्तानां सर्वानि पापानि' जो भक्तों के सब पापों को खींच लेवे उसे कहिये 'कृष्ण'। सो हे कृष्ण! मैं जो घोर पापी हूँ, जिसके पापों के उदय होने से नेत्रों के सामने यह भयंकर दुःखदायी घोर दृश्य आन उपस्थित हुआ है, जो मुझे आततायी बनाकर न जाने कितने काल तक कुंभीपाकादि नरकों का दुःख भोगावेगा, सो तुम कृपा कर मेरे उन सब पूर्व जन्मार्जित पापों को खींच मुझे निर्मल कर दो।

(३) गर्ग संहिता के १५वें अध्याय के २८ से ३१वें श्लोक तक में श्री गर्गाचार्य महाराज ने कृष्ण शब्द के एक—एक अक्षर का अर्थ स्पष्ट करते हुए इनके नाम की व्याख्या निम्नांकित प्रकार से की है—

'क' का अर्थ है— कमलाकान्त, 'ऋ' का अर्थ है— राम, 'ष' अक्षर षडविध ऐश्वर्य के स्वामी श्वेतद्वीप निवासी भगवान विष्णु का वाचक है। 'ण' नृसिंह का प्रतीक है और 'अकार' अक्षर अग्निभुख (अग्निरूप से हविष्य के भोक्ता अथवा अग्निदेव के रक्षक) का वाचक है तथा दोनों विसर्ग रूप बिन्दु (:) नर—नारायण के बोधक हैं। ये छहों तत्त्व जिस महामंत्र रूप पर परिपूर्णतम शब्द में लीन हैं, वह इसी व्युत्पत्ति के कारण 'कृष्ण' कहा गया है।

(४) ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्रीकृष्ण का जन्म 'खण्ड' के अन्तर्गत श्री गर्गाचार्य जी महाराज ने भगवान श्री कृष्ण का नामकरण—संस्कार करते समय कहा है—'कृष्ण' में जो 'ककार' है वह ब्रह्म का वाचक है। 'ऋकार' अनन्त (शेषनाग) का वाचक है। मूर्धन्य 'षकार' शिव का और 'णकार' धर्म का बोधक है। अन्त में जो 'अकार' है, वह श्वेतद्वीप निवासी विष्णु का वाचक है तथा विसर्ग नर—नारायण अर्थ का बोधक माना गया है। ये श्री हरि उपर्युक्त सब देवताओं के तेज की राशि हैं। सर्व स्वरूप सर्वाधार तथा सर्वबीज हैं, इसलिये कृष्ण कहे गये हैं। 'कृष' शब्द निर्वाण का वाचक है, 'णकार' मोक्ष का बोध है और 'अकार' का अर्थ दाता है। ये श्री हरि निर्वाण—मोक्ष प्रदान करने वाले हैं, इसलिये कृष्ण कहे गये हैं। 'कृष' का अर्थ है निश्चेष्ट, 'ण' का अर्थ है भक्ति और 'अकार' का अर्थ है दाता। भगवान निष्कर्म भक्ति के दाता हैं, इसलिये उनका नाम 'कृष्ण' है। 'कृष' का अर्थ है कर्मो का निर्मलन, 'ण' का अर्थ है दास्यभाव और 'अकार' प्राप्ति का बोधक है। वे कर्मो का समूल नाश करके भक्ति की प्राप्ति कराने वाले हैं, इसलिये कृष्ण कहे जाते हैं। श्रीकृष्ण

शेष पृष्ठ 11 पर

शराब की दुकानों पर अनेकों नगरों में तोड़ फोड़ की गई। पुलिस ने अनेकों को गिरफ्तार किया।

टिप्पणी

❖ सर्वोच्च न्यायालय ने शराब की दुकानों को राष्ट्रीय राजमार्ग से ५०० मीटर दूर खोलने का निर्देश दिया।

❖ इस समाचार के सुनते ही अनेकों नगरों की दुकानों में, जोश में आकर महिलाओं ने जबर्दस्त तरीके से तोड़—फोड़ की और सामान फेंक दिया।

❖ यह भी तो देखना चाहिए कि करोड़ों रुपयों में दुकानें खोलने की अनुमति मिलती है।

❖ इस वर्ष बीस हजार करोड़ रुपयों में उ० प्र० में ठेका छुटा है।

❖ हमारा परामर्श है कि राज्य सरकारों के विरुद्ध प्रदर्शन किए जाने चाहिए लेकिन उसमें हिंसा—तोड़ फोड़ नहीं होनी चाहिए।

❖ जोशीली महिलाएं गिरफ्तार क्यों हुई? उन्हें पुलिस को लौटा देना चाहिए था। अखिलेश के शासन काल में ५५८ बार पुलिस मुस्लिम मौहल्लों से पिट कर वापिस आई थी लेकिन हिन्दू मौहल्ले से लोगों को गिरफ्तार करने में सदैव क्यों सफल हो जाती है? इस पर भी ध्यान देना चाहिए।

इन्द्रदेव म्यांमार वाले बुलन्दशहर

अमेरिका –स्थित मिडिल ईस्ट मीडिया रिसर्च इन्स्टीट्यूट का खुलासा

पाकिस्तान कश्मीर के गिलगिट -बाल्टिस्तान क्षेत्र को ५० वर्ष की 'लीज' (पट्टे) पर चीन को सौंप चुका है!

हरिकृष्ण निगम

कश्मीर के सम्बन्ध में पाकिस्तान और चीन की बन्दरबांट का हाल में एक नया रूप सामने आया है जिसमें पहले ही भारत का सम्पूर्ण राज्य को अपना अविभाज्य अंग मानने पर षाकिस्तान इसे एक अंन्तर्राष्ट्रीय मुद्दा बनाता रहा है। जहाँ पाकिस्तान पहले ही अक्साई चिन का विशाल भूभाग चीन को सौंप चुका है। अब वह गिलगिट और सारे बाल्टिस्तान को भी चीन को ५० वर्षो के लिए लीज या पट्टे पर बनाने का मन बना चुका है। अपने चीन के साथ रणनीतिक सम्बन्धों को मजबूत करने के साथ वह यह निशाना अमेरिका और भारत के साथ दो मन्तव्यों को पूरा करने के लिए साध रहा है। एक ओर अमेरिका से अलग थलग पड़ने व उसकी उपेक्षा का बदला वह चीन की बढ़ती दोस्ती के रूप में भूराजनीतिक लक्ष्यों को साध रहा है, दूसरी और वह इस प्रकार कश्मीर के मुद्दे पर, तुरुप का पत्ता अपने हाथ में रखना चाहता है।

अमेरिका–स्थित एक प्रसिद्ध सुरक्षा विशेषज्ञों के संगठन मिडिल ईस्ट मीडिया रिसर्च इन्स्टीट्यूट ने हाल में स्थानीय श्रोतों को उद्घृत करते हुए कहा है कि इस नई रणनीति द्वारा भारत की कश्मीर पर दावेदारी को नई चोट पहुंच सकती है।

यह विडम्बना है कि

हमारी अपनी सरकार कहती तो यह है कि समस्त कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है पर वह देशवासियों को यह भी नहीं बताना चाहती है कि बाल्टिस्तान वस्तुतः कहां है उसका अतीत क्या था या गिलगिट क्यों अंग्रेजों के समय से ही हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था, उसके प्रसिद्ध नगर कौन कौन से थे और क्या वहाँ भी एक समय हिन्दू और सिखों ने अपने श्रम और बाहुबल से उसे कैसे व्यवसायिक केन्द्र बनाने की कोशिश की थी। क्या स्वयं अपने ही इस सीमवर्ती क्षेत्र की भूराजनीतिक महत्ता से हम अवगत थे?

बाल्टिस्तान पाकिस्तान नियंत्रित कश्मीर का हिमालय के कराकोरम क्षेत्र का वह हिस्सा है जो कि पर्वत चोटी के दक्षिण में पश्चिमी लद्दाख में स्थित है। यहां आज तिब्बती मूल की मुस्लिम जनजाति रहती है जो एक समय हिन्दू–बौद्व थी जिसे अंग्रेजी शासनकाल में 'लिटिल तिब्बत' भी कहा जाता था। बाल्टिस्तान का मुख्य नगर स्कार्डू है।

गिलगिट उत्तरी कश्मीर का वह पर्वतीय क्षेत्र है जो सिन्धु नदी और वाखान के बीच में पड़ता है और आज पाकिस्तान के नियंत्रण में है। एक समय चौथी शताब्दी से आठवीं सदी तक यह पटोला राजवंश के हाथ में था और यह व्यवसाय और प्रशासन का केन्द्र बन गया। इस क्षेत्र को दर्दिस्तान भी कहा जाता है जहां हिन्दू–सिख जनसंख्या भी काफी थी। पहले यहां राजा रणजीत सिंह का आधिपत्य था पर बाद में यह डोगरा राजवंश के हाथ में आ गया।

हमारे देश की स्मृति में सारा कश्मीर और उससे लगा हुआ तिब्बती क्षेत्र भारत से जुड़ा क्षेत्र माना जाता रहा है। जहां के मठों और पूजा स्थलों में सदियों से दुर्गम क्षेत्र होने पर भी चाहे पर्यटक हो, साहसिक तीर्थ यात्रा हों या ब्रिटिश प्रशासन के नौकरशाह हों यात्रा करते रहे हैं पर इस पहचान को धुंधलाने का श्रेय हमारे नेताओं की नादानी या लापरवाही या अदूरदर्शिता को ही देना चाहिए। कश्मीर और तिब्बत के मसले पर हमारी सरकार शुरु में पाकिस्तान और चीन से डरी रही है जिनकी दुरभिसंधि जगजाहिर रही है। तिब्बत पर चीन का पूरा नियंत्रण के बाद उसकी और पाकिस्तान की सीमायें मिल गई हैं जिसकी वजह से भारत के विरुद्ध सीधा सैनिक गठजोड़ चालू हो चुका है। बंगलादेश और नेपाल भी चीन के मित्र हैं इसलिए उसकी त्रिकोणीय रणनीति हमें असमंजस में डाल सकती है। कश्मीर के चीन अधिकृत क्षेत्र में पहले ही कराकोरम, पाक चीन राजमार्ग और ग्वादर बन्दरगाह पर चीनी नौ सेना का नियंत्रण हमारी सुरक्षा को खतरे में डाल चुका है। सारी उत्तरी सीमा पर चीनी सेल फोन को नेटवर्क काम करते हैं। लगातार कुतरे हुए मानचित्र की पुनर्रचना के लिए भारत के पास कोई रणनीति है। जहां ब्रह्मपुत्र की जलराशि पर चीन की बदनीयत पहले ही रही है कि वह इसकी धारा उत्तर चीन की तरफ मोड़ने के लिए बांध बना रहा है। कांग्रेस ने चीन को सदैव पैर फैलाने का मौका दिया है क्योंकि चाहे पाकिस्तान द्वारा हजारों वर्गमील का क्षेत्र को दिया जाना हो या वे दोनों देश हमारे चारों तरफ सड़क परिवहन, सेल टावर, रेल नेटवर्क, पाइप लाइन, छावनियों आदि का विकास कर हमें घेर रहे हों। हम वर्षो तक चुप्पी साधे रहते हैं फिर सहसा सीमाओं की दयनीय स्थिति पर हताशा दिखाते हैं। "ड्रैगन के पंजों से जूझने का समसामयिक सवाल, इस पर किसी विमर्श के प्रारम्भ होने के पहले ही राष्ट्रीय मनोबल के अभाव में अनुत्तरित रह जाता है।

बागपत में तीन तलाक के खौफ से बदला धर्म रचाई शादी, कचहरी परिसर में युवती कक्ष में किया नवदंपती पर हमला युवती को पेचकस घोंपा युवक को पीटा

प्रतिक्रिया

१. मुस्लिम धर्मी खैरून ने हिन्दू धर्म अपना कर दीपक नाम के युवक से विवाह कर लिया क्योंकि उसे मुस्लिम धर्म में जारी तीन तलाक की प्रथा पसन्द नहीं थी। उसका नया नाम खुशबू रखा गया।

२. हम उसके साहस तथा हिम्मत की प्रशंसा करते हैं।

३. तीन तलाक की प्रथा से पीड़ित अनेकों मुस्लिम विधवाएं इस प्रथा को समाप्त करने की मांग कर रही हैं।

४. कुछ दिन पूर्व एक मुस्लिम युवक ने तलाक प्रथा के विरोध में मुस्लिम धर्म छोड़कर हिन्दू धर्म स्वीकार करके हिन्दू लड़की से शादी की थी।

५. हम दोनों वर–वधु की प्रगति और सुखमय जीवन व्यतीत होने की कामना करते हैं।

६. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायधीशों से भी अनुराध है कि वे हिम्मत करके तीन तलाक समाप्त करने के पक्ष में निर्णय दें क्योंकि वातावरण अनुकूल है।

७. युवती के परिवार जनों की निन्दा की जाती है जिन्होंने मार पीट की।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

विचित्र किन्तु सत्य

१. मोदी सरकार ने पिछले तीन वर्षो में ११६६ पाकिस्तानियों को भारत की नागरिकता दी है। क्यों दी है? एक को भी नागरिकता नहीं देनी चाहिए थी

२. आज तक चैनल पर दिखाया जा रहा है कि भगवान राम लगभग ७००० वर्ष पहले जन्मे थे। तुलसी तथा बाल्मीकि की रामायण को आधार मानकर राम वन गमन मार्ग दिखाया जा रहा है जो अयोध्या से चित्रकूट तक २६५ किलोमीटर लम्बा है। यह मार्ग टूटा–फूटा, कच्चा पक्का, ऊबड़–खाबड़ स्थिति में है।

❖ इस मार्ग को १५० करोड़ रुपयों से सुन्दर–चौड़ा और आकर्षक बनाने की योजना है।

❖ वास्तविकता तो यह है कि भगवान राम का जन्म नौ लाख सत्तर हजार एक सौ सत्रह वर्ष पूर्व हुआ था तब त्रेता युग था। अतः ७००० वर्ष पूर्व उनकी जन्म तिथि कहनी गलत है।

❖ श्री राम जन्म भूमि मन्दिर से जनता का ध्यान हटाने के लिए रामायण संग्रहालय और राम वन गमन मार्ग की योजना का प्रचार किया जा रहा है।

❖ श्री राम मन्दिर संसद से २०१८ में कानून बनाकर बनवाया जाना सर्वोत्तम है तब मस्जिद बनाने की कोई जरूरत नहीं होगी।

३. दो दर्जन तलाक शुदा मुस्लिम महिलाओं ने मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ से भेंट कर मदद का अनुरोध किया है।

❖ महिलाओं को उन मुल्ला–मौलवियों से भेंट करके तीन तलाक के विरोध में पत्र लिखवाकर मोदी के पास भेजने चाहिए जो अभी भी तीन तलाक की प्रथा के पक्ष में हैं।

❖ मुल्ला मौलवियों से गुजारा भत्ता भी मांगना चाहिए।

❖ यदि तलाक का निर्णय अदालत से होगा तो गुजारा भत्ता मिलेगा।

वीर सिंह, उपाध्यक्ष सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

पी.ओ.के. सहित सम्पूर्ण कश्मीर हमारा ही है

साभार राष्ट्रधर्म

'चित भी अपनी, पट भी अपनी, अंटा मेरे बाप का' के सिद्धान्त पर चलने वाले पूर्व केन्द्रीय मंत्री और जम्मू–कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. फारुख अब्दुल्ला का सच अन्ततः सामने आ ही गया। छद्म शालीनता और नकली सेक्यूलरिज्म का जो मुखौटा फारुख अब्दुल्ला ने वर्षों से ओढ़ रखा था, वह तब पूरी तरह उतर गया, जब २५ नवम्बर को दूरदर्शन के अनेक चैनलों ने पी.ओ.के. के विषय में उन्हें यह कहते हुए प्रदर्शित किया–''अरे, तुम्हारे बाप का है पी.ओ.के.? है ताकत पी.ओ.के. लेने की? ले करके तो दिखाओ।' उस समय उनके पुत्र उमर अब्दुल्ला भी साथ थे। उसके बाद 'हुर्रियत कान्फ्रेंस' के अलगाववादी स्वर में स्वर मिलाने में भी उन्हें देर नहीं लगी। कश्मीर की धरती पर उनके वालिद शेख मोहम्मद अब्दुल्ला जो विष–बीज बो गये थे, उसकी जहरीली फसल कहीं कोई दूसरा अलगाववादी न काट ले जाए, इसकी बेताबी उनमें साफ–साफ झलक रही थी। सम्भवतः उनकी प्रतिक्रिया प्रधानमंत्री श्री मोदी के उस वक्तव्य पर थी, जिसमें उन्होंने पाकिस्तान को कड़े शब्दों में चेतावनी दी थी–'भारत से लड़कर खुद को तबाह न करे पाक।'

अरे, किसी मुगालते में न रहिए फारुख मियाँ! पी.ओ.के. सहित सम्पूर्ण कश्मीर हमारे बाप–दादों का ही था और सदैव रहेगा। आज से नहीं, हजारों साल से। महर्षि कश्यप के द्वारा जल के गर्भ से निकाली गई पवित्र धरती है कश्मीर, जिसका प्राचीन इतिहास है 'नीलमत पुराण' में। इसके बाद महाभारत–काल से (ई. पूर्व २५०० वर्ष से) १२वीं शताब्दी तक का ऐतिहासिक विवरण है कल्हण की 'राजतरंगिणी' में। कल्हण से बड़ा प्रामाणिक इतिहासकार आज तक कोई नहीं हुआ, जिसकी धारणा थी कि इतिहासकार को न्यायाधीश की तरह राग–द्वेष–रहित होना चाहिए।

श्लाघ्यः स एव गुणवान् राग-द्वेषबहिष्कृता।
भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती।।

कल्हण के बाद जोनराज, श्रीवर एवं शुक की राजतरंगिणियाँ हैं, जिनमें आप स्वयं देख सकते हैं कि कश्मीर हमारी ही बपौती है। आप भी भारत के ही महान् पूर्वजों के वंशज हैं, जिसे भूलकर आज आप कबायली लुटेरों की उस जमात में शामिल होने के बेचैन हैं, जिसने कश्मीर के तत्कालीन शासक महाराज हरिसिंह के द्वारा सम्पूर्ण कश्मीर के भारत में पूर्णतया विधिपूर्वक विलय के बाद कुछ भूभाग को, जिसे आज पी.ओ.के. कहा जाता है, बेईमानी से दबा लिया। खातिरजमा रखें फारुख साहब, यह भारत का पूर्णतया वैधानिक भाग है जो शीघ्र ही फिर पाकिस्तान के नापाक कब्जे से मुक्त होकर भारत में ललक के साथ मिलने के लिए अग्रसर है। आपने अपने ताजा बयानों से उस पुरानी कहावत को सही सिद्ध कर दिया कि 'नीम न मीठी होय, किता सींचो गुड–घी से।' साँप को पिलाया गया दूध भी विष ही हो जाता है। भारत के विरुद्ध जहर उगलने में आप अपने मरहूम वालिद शेख अब्दुल्ला के नक्शे–कदम पर ही चल रहे हैं, लेकिन जनाब! शेख के वक्त से झेलम और चिनाब में बहुत पानी बह चुका है। अब परिस्थितियाँ और देश की शिखर राजनीति बहुत बदल चुकी है। दिल्ली की गद्दी पर अब पं. जवाहरलाल नेहरू नहीं हैं, जिन्होंने शेख साहब की चिकनी–चुपड़ी बातों में फँसकर उनकी पाकिस्तानपरस्ती, कट्टर मजहबी संकीर्णता और भारत के प्रति भयावह विद्वेष को बार–बार नजरअंदाज किया। यहाँ तक कि सेक्शन ३७० जैसे उस घातक प्रावधान को भी उन्होंने स्वीकार कर लिया, जिसकी रचना शेख साहब ने अकेले ही कश्मीर को शेष भारत से अलग करने के लिए की थी। इसी का दुष्परिणाम है आज की कश्मीर–समस्या। दो विधान और दो निशान (झण्डों) के प्रावधान वाले इस काले कानून के विरुद्ध डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी सहित असंख्य देशभक्तों ने आन्दोलन द्वारा विरोध व्यक्त करते हुए आत्माहुति दी; लेकिन दुर्भाग्यवश धारा ३७० आज भी अस्तित्व में है। इसी की आड़ में वहाँ जे.के.एल.एफ. और हुर्रियत कान्फ्रेंस के साथ कश्मीर के विरुद्ध खतरनाक खेल खेलने के लिए अब आपकी 'नेशनल कान्फ्रेंस' भी सम्मिलित हो गई है। १९५२ का दिल्ली समझौता, दूसरा घातक कदम था। पं. नेहरू को शेख ने सेक्शन ३७० को अस्थायी उपबन्ध बताया था, जबकि वह स्वयं उसे स्थायी बनाने के लिए प्रयत्नशील थे। जम्मू–कश्मीर की 'प्रजा परिषद्' ने ३७० का प्रचण्ड विरोध किया, जिसे दिल्ली ने नासमझीवश नजरअंदाज किया। ८ अगस्त, १९५३ को शेख अब्दुल्ला को मुख्यमंत्री पद से हटा दिया गया। उनके स्थान पर मुख्यमंत्री बने बख्शी गुलाम मोहम्मद। बख्शी, जी.एम. सादिक और डी.पी. धर के समझाने से शेख की असलियत पं. नेहरू को बाद में पता लगी; लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। फिर भी शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार किया गया। उन पर भारत के विरुद्ध विदेशी शक्तियों के साथ साजिश करने का आरोप लगा; लेकिन पं. नेहरू थोड़े दिन बाद ही शेख अब्दुल्ला के झांसे में पुनः आ गये। लद्दाख के राजनीतिक नेताओं ने १९४९ और १९५२ में बार–बार दिल्ली को शेख की वास्तविकता से परिचित कराने का प्रयत्न किया। इनमें छेवांग रिगजिन (लद्दाखी बौद्ध एसोसिएशन के अध्यक्ष) मुख्य थे।

१९५६ में जम्मू–कश्मीर की संविधान–सभा के द्वारा प्रियम्बुल में जम्मू–कश्मीर को भारत के अविभाज्य अंग के रूप में स्पष्ट रूप से घोषित कर दिया गया। १९६८ में शेख साहब को जेल से मुक्त कर दिया गया। दिल्ली की सरकार ने फिर उन पर भरोसा किया। श्रीनगर में फिर 'आजाद कश्मीर' के लिए षड्यंत्र होने लगे, जिन्हें प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा

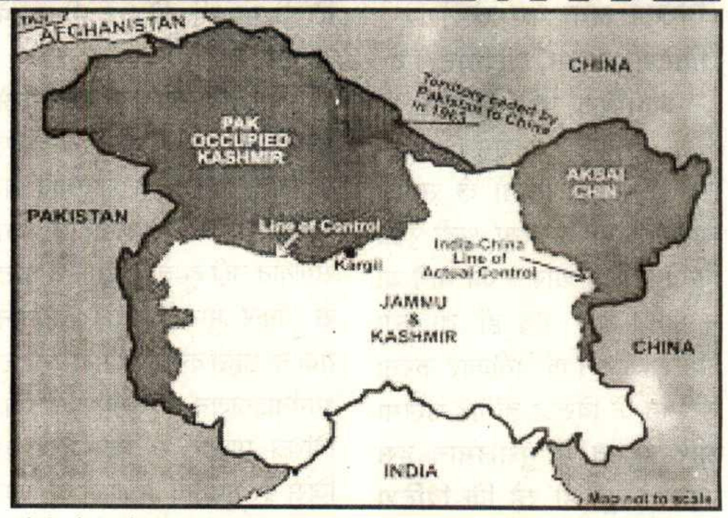

गाँधी ने क्यों नजरअंदाज किया, पता नहीं; लेकिन १९७१ में नई दिल्ली पहुँचने पर शेख साहब को अवरुद्ध करने का उन्होंने आदेश दिया। किन्तु १९७४ में इन्दिरा गाँधी और शेख साहब में फिर गुफ्तगू होने लगी और २४ फरवरी, १९७५ को शेख साहब जम्मू–कश्मीर की सरकार के पुनः मुखिया बनाये गये। इस बार उन्हें कांग्रेस का भी समर्थन प्राप्त था। १९७७ में शेख साहब की 'नेशनल कान्फ्रेंस', केन्द्र के सहयोग के बिना ही सरकार बनाने में सफल हो गई। विपिनचन्द्र, मृदुला मुखर्जी और आदित्य मुखर्जी जैसे गैर भाजपाई इतिहासकारों ने भी अपनी पुस्तक (आजादी के बाद का भारत, सं. २००२, पृष्ठ ४२५) में शेख अब्दुल्ला को निरंकुश, सनकी, स्वेच्छाचारी बतलाते हुए, पाकिस्तानपरस्त अलगाववाद की दिशा में झुका कहा है। आगे वहीं स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'वे कश्मीर के मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक भावनाओं को उभारने में लगे थे।' शेख अपने उतार–चढ़ाव भरे इतिहास में कभी कैद हुए और कभी नजरबंद रहे। पं. नेहरू उन्हें रिहा कराते रहे। बांग्लादेश के युद्ध और पाकिस्तान के बंटवारे के बाद १९७५ में वे फिर मुख्यमंत्री हुए। १९८२ में शेख की मृत्यु के बाद फारुख अब्दुल्ला उनके उत्तराधिकारी के रूप में मुख्यमंत्री बने। कश्मीरी पंडितों पर हमले उनके शासनकाल में ही प्रारम्भ हो गये थे। इस कारण प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह की सरकार ने उन्हें बर्खास्त कर राष्ट्रपति–शासन लगाया। तात्पर्य यह कि फारुख साहब तो अपनी चालें बहुत दिन से चल रहे हैं; लेकिन यह केन्द्र सरकार की नादानी है, जो वे दोहरी चालें चलने में अब तक सफल होते रहे। अब तो वे खुले–खजाने अलगाववादियों की हिमायत कर रहे हैं। फारुख साहब! इतना तो आप भी जानते होंगे कि अलगाववादियों का न तो कोई दीन है और न ईमान। अपने बेटे–बेटियों को तो वे विदेशों में पढ़ा रहे हैं और कश्मीर के किशोरों के हाथों में पत्थर थमाते रहे हैं, उनके स्कूल–कॉलेजों को आग के हवाले करते रहे हैं, ताकि आम कश्मीरी अवाम के बच्चे पढ़–लिख न सकें और उनके प्रोत्साहन पर पत्थरबाजी करते रहें, जो नोटबंदी के कारण इस समय बंद है।

कश्मीर में जब पर्यटकों के आने का सीजन था, तब तो ये हुर्रियत कान्फ्रेंस और जे.के.एल.एफ. के लोग पत्थरबाजी और आगजनी में लगे थे और अब जब वह सीजन निकल चुका है, पर्यटन की आय पर निर्भर कश्मीरी जनता मुफलिसी के कगार पर है, तब यासीन मलिक जैसे मौकापरस्त लोग पर्यटकों को सुरक्षा का भरोसा दे रहे हैं। हिन्दू तीर्थों के दर्शनार्थियों से कश्मीर के तीर्थों में आने की मन्नतें कर रहे हैं। इन्हें कश्मीर में निवास करने के इच्छुक कश्मीरी पंडित नहीं चाहिए; लेकिन उनकी जेबें हल्की करने के लिए ये बेचैन हैं।

फारुख साहब! आग आग होती है, उससे न खेलिए। आग जब बढ़ जाती है, तो वह लगाने वाले को भी नहीं बख्शती। साथ ही यह भी न भूलिये कि अब दिल्ली में पं. नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाँधी और श्रीमती सोनिया गाँधी की सरकार नहीं है। अब वहाँ वह सरकार है, जो फौलाद की तरह मजबूत और चट्टान की तरह सुदृढ़ है। उसके लिए पूरा कश्मीर एक भूखंड मात्र नहीं, सजीव और सप्राण भारतमाता का पवित्र अंश है, जिसकी रक्षा वह प्राणप्रण से करने के लिए कृतसंकल्प है। यह भारत का शारदा तीर्थ है। इसका कण–कण हमारे लिए महाशिव का स्वरूप है। यह महामाहेश्वर आचार्य अभिनवगुप्त, आनन्दवर्द्धन, रुय्यक, मंखक और मम्मट सदृश हजारों मनीषियों की तपःस्थली है। इस पर किसी की जरा–सी भी वक्रदृष्टि हमारे लिए असह्य है।

मुस्लिम शरीयत में परिवर्तन : विचार, वास्तविकता एवं संभावनायें

✍ तस्लीमा नसरीन

(पिछले अंक का शेष)

ब्रिटिश शासन, शरीयत एवं आधुनिक परिस्थितियाँ

ब्रिटिश शासन (१८५७–१९४७) में मुसलमानों के सामने उलेमा ने यह समस्या खड़ी रखी कि वे ब्रिटिश शासन को मानें या न मानें। और यदि हाँ, तो क्या ब्रिटिश शासन को स्वीकार करना शरीयत के विरूद्ध होगा? **उलेमा और बहुमत में मुसलमान इस प्रश्न से दूर ही रहे कि ब्रिटिश शासन है और उसे उखाड़ फेंकना राष्ट्रधर्म है। दुर्भाग्यवश कुरान इस संदर्भ में अपूर्ण है और कोई दिशा-निर्देशन नहीं देती है।** ऐसी कोई स्थिति मुहम्मद के समय में नहीं आई जबकि मुसलमानों को अन्य बहुसंख्यक धर्मावलम्बियों के साथ दूसरे देश में रहना पड़ा हो और जहाँ का शासन भी मुसलमानों को हाथ में न हो। **कुरान इस सम्बन्ध में कोई दिशा-निर्देशन नहीं देती कि इस स्थिति में वहाँ मुसलमान क्या करें? उस देश के शासन के प्रति उनका दृष्टिकोण क्या हो? उस देश के बहुसंख्यक गैर-मुस्लिमों के साथ उनके सम्बन्ध कैसे हों? उस देश की गैर-इस्लामी बहुसंख्यक संस्कृति में वे अपने आपको कैसे व्यवस्थित करें?** परिणाम यह निकला है कि इस्लाम ने दुनिया भर में मुसलमानों के आगे समस्याएँ खड़ी कर दी हैं, जिनका वे कोई हल नहीं ढूँढ पाते। आधुनिक युग प्रारम्भ होते ही जिसे हम प्रजातंत्र, लचीली एवं उदारवादी राजनैतिक व्यवस्थाओं के रूप में पिछली शताब्दी से तीव्रगति से आगे बढ़ते देख रहे हैं। **इस्लाम और शरीयत ने मुसलमानों की समस्याओं में बेहद वृद्धि कर दी है। पिछले २०० वर्षों में भी कुरान इन स्थितियों में व्यवस्थित होने का कोई रास्ता मुसलमानों को नहीं दिखा सकी है। हाँ, उसने मुसलमानों को भ्रमित अधिक किया है। रूढ़िवादी लगातार गैर-मुस्लिम सरकारों के प्रति असहिष्णु होने, जिहाद छेड़ने, उग्रवाद एवं अलगाववाद को बढ़ावा देने में लगे रहते हैं और दुर्भाग्यवश इसके लिए वे कुरान की उन चंद आयतों का सहारा लेते हैं जो शायद इस्लाम के प्रारम्भिक काल में उस समय की स्थिति को देखते हुए इस्लाम को स्थापित करने की दृष्टि से लिखी गई थीं, जिहाद भी उनमें से एक है।**

बात–बात पर कठमुल्ले मुसलमानों को जिहाद के लिए भड़काते रहते हैं, वे राष्ट्रवाद या राष्ट्रीयता में समस्याओं का समाधान नहीं ढूँढते। लेखक ने मेरठ से लेकर मुम्बई, इंदौर, उज्जैन तक के शहरों को इस्लामिक स्टूडेन्ट आर्गनाइजेशन (सिम्मी) के एक विचित्र पोस्टर से पटा देखा है जिस पर मुहम्मद इकबाल का एक शेर लिखा हुआ है–

इन ताजा खुदाओं में, बड़ा सबसे वतन है।
जो पैहरन है इसका, इस्लाम का कफन है।।

इस शेर के नीचे पोस्टर में राष्ट्रवाद को एक बड़े गोले के रूप में दिखाया गया है, जिसमें से खून की बूँदें टपक रही हैं

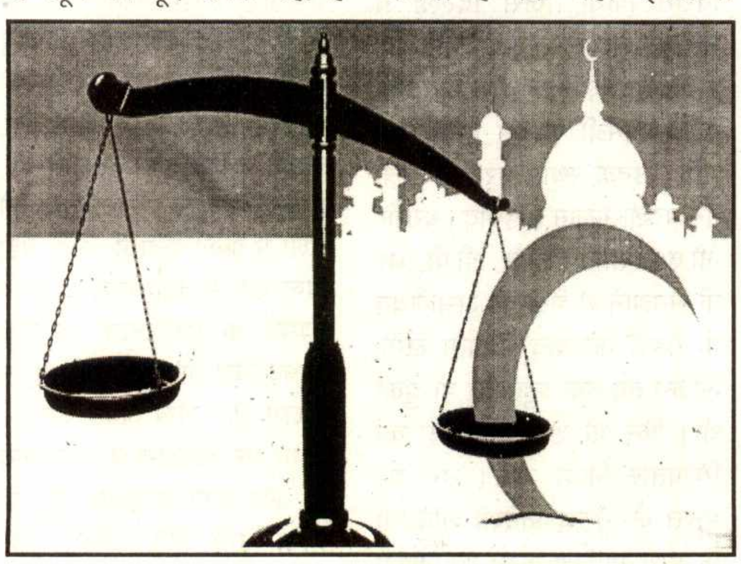

तथा खून की बूँदों के नीचे लिखा है शरीयत, खिलाफत, उर्दू इत्यादि–इत्यादि। दूसरे शब्दों में राष्ट्रवाद शरीयत एवं खिलाफत की हत्या करता है और जैसे यही कार्य भारत में भी हो रहा है। इस्लामी तुर्की खलीफा १९१७ में ही समाप्त कर दिया गया परन्तु और कौन–सा इस्लामी खलीफा दुनिया में 'इस्लामिक स्टूडेन्ट आर्गनाइजेशन' लाने या बनाने की कोशिश कर रहा है, इसका उत्तर इस संगठन के किसी अधिकारी या उलेमा के पास भी नहीं है। निष्कर्ष साफ है–विद्यार्थियों के नाम से उनकी आड़ में 'जमाइते इस्लामी' कोई उग्रवादी गिरोह खड़ा कर रहा है और मुसलमानों को भड़का रहा है। यह शरीयत का सीधा–सीधा दुप्रयोग है। चुनी गई और विधि द्वारा स्थापित राज्य व्यवस्था को मुस्लिमों द्वारा अस्वीकार करने को कहा जा रहा है, क्योंकि यह शरीयत के अनुसार नहीं है। सारी दुनिया में यही हो रहा है और रूढ़िवादियों द्वारा बताया जा रहा है कि मुसलमान किसी भी गैर–इस्लामी शासन से तब तक लड़ते रहें, अशान्ति फैलाते रहें और जिहाद करते रहें जब तक कि इस्लामी शासन स्थापित नहीं हो जाता। जिन देशों में इस्लामी शासन है वहाँ यह कहकर भड़काया जाता है कि यह सच्चा इस्लामी शासन नहीं है और शरीयत के अनुसार काम नहीं कर रहा है, सच्चा शरई निजाम लाओ। जहाँ की सरकारें या कथित सरकारें यह दावा करती हैं कि वहाँ इस्लामी शरीयत के अनुसार हुकूमत चलाई जा रही है, वहाँ स्वयं मुसलमान यह कहकर जिहाद छेड़ देते हैं कि यह बहुत कठोर है तथा इसमें साँस लेना भी मुश्किल है। परिणाम यह निकलता है किं आज दुनिया में यह धारणा बन गई है कि इस्लाम एक नितान्त असहिष्णु एवं मानवता के विरूद्ध ही एक विचार–धर्म है।

इसके परिणाम की भयानकता से शायद मुल्ले–मौलवी और रूढ़िवादी उलेमा भी परिचित नहीं हैं। जिस उग्रवाद और जिहाद के लिए रूढ़िवादी दुनिया में मुसलमानों को भड़का रहे हैं, उसके कुछ परिणामों का एक मोटा आंकलन लेखक ने करने की कोशिश की है। विश्व के ५२ मुस्लिम राष्ट्रों एवं भारत सहित लगभग १२ अन्य गैर–मुस्लिम राष्ट्रों में जहाँ मुसलमानों ने इस्लाम और शरीयत के नाम पर समस्याएँ खड़ी कर रखी हैं, जिहाद, साम्प्रदायिकता आतंकवादी एवं सरकार विरूद्ध कार्यवाहियों में **१६४० मुस्लिम युवक प्रतिदिन मारे जाते हैं। कठमुल्ले कहते हैं कि ये शहीद हैं और सीधे जन्नत जाएँगे! ये १६४० प्रतिदिन मरने वाले मुस्लिम युवक बजाय जन्नत में जाने के यदि पृथ्वी पर ही रहते तो इस्लाम और शरीयत का ज्यादा भला कर सकते थे।**

जहाँ तक भारत में राजनैतिक स्थिति के बदलाव का प्रश्न है मुस्लिम रूढ़िवादिता के लिए उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। जहाँ भारत में पहले उसके ऊपर 'किताबिया' (ईसाई अर्थात् ब्रिटिश) शासन करते थे, आजादी के बाद 'काफिर' शासन करने लगे। जहाँ 'किंताबिया' शासन के खिलाफ मुसलमान जिहाद न कर सके वहाँ 'काफिर' शासन के विरूद्ध उन्होंने जिहाद का नारा कैसे बुलंद कर दिया? —यह विवेचना का विषय है। इससे शरीयत को एवं शरीयत में होने वाले परिवर्तनों की संभावनाओं को समझने में सहायता मिलेगी। एक लम्बी सूची ऐसे फतवों की है जो ब्रिटिश शासन में दिये गये और जिनका अर्थ यह था कि अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ मुसलमानों का कोई भी कदम उठाना, बगावत करना या जिहाद करना गुनाह है तथा शरीयत के अनुकूल नहीं है। अनेक तर्कों के आधार पर ऐसा करने का प्रयत्न किया गया। यह बताने या समझने का प्रयत्न किया गया कि ब्रिटिश शासन ने यद्यपि 'दारूल इस्लाम' का खात्मा कर दिया है परन्तु वह 'दारूल हरब' भी नहीं है, वह 'दारूल अमन' है अर्थात मुसलमानों के खिलाफ नहीं है और धार्मिक क्रियाओं में कोई बाधा नहीं पहुँचती।२ मौलवी नजीर अहमद ने समस्त उपर्युक्त दृष्टिकोण को अपने एक लेख (जो फतवे के रूप में ही है) में समाहित करके प्रस्तुत किया है।

मौलवी नजीर अहमद कुरान के इस आदेश को आधार बनाते हैं कि ''अल्लाह का हुक्म मानो, रसूल का हुक्म मानो और अपने में से उनका भी जो सत्ता में हैं'' – (कुरान ४.५६) आज भारत में मुसलमान भी सत्ता में हैं, चुने हुये मुस्लिम प्रतिनिधि शासन एवं संसद में हैं। कुरान के इस आदेश के अनुसार उनका भी हुक्म मानने को कहा गया है ''जो सत्ता में हैं'' और यही शरीयत का सही दृष्टिकोण बताया गया है।

इन सब फतवों को, जो ब्रिटिश शासन को मुसलमानों द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के लिए दिये गये थे, देखने के पश्चात सामान्य प्रश्न उठता है कि वैसा ही दृष्टिकोण मुस्लिम रूढ़िवादी अब भारत सरकार के प्रति क्यों नहीं रख रहे? मौलाना अब्दुल हई और मौलवी नजीर अहमद के फतवों के तर्कों एवं आधारों को यदि तत्कालीन भारतीय स्थितियों में देखते हैं तो शरीयत के सम्बन्ध में निम्न निष्कर्षों पर पहुँचते हैं :

(१) कुरान के उपर्युक्त आदेश ''...तुममें से जो सत्ता में हैं उनका भी आदेश मानो'' से थोड़ा–सा भ्रम होता है कि शासन में जो मुसलमान हों केवल उनका ही आदेश मानो। इसका निराकरण ऊपर किया जा चुका है कि भारत में धर्म पर आधारित सरकार नहीं है और जो सत्ता में हैं उनमें मुसलमानों सहित गैर धर्मावलम्बी एवं नास्तिक (जैसे कम्यूनिस्ट) भी सम्मिलित हैं। इन नास्तिकों में मुसलमान भी हैं। इस तरह ''तुममें से'' का तात्पर्य भारत के समस्त नागरिकों से है, न कि सिर्फ मुसलमानों से। मुहम्मद ने कभी नहीं सोचा था कि भविष्य में ''तुममें से'' का अर्थ प्रजातंत्र में गैर–मुस्लिम और नास्तिक मुस्लिम (जैसे कम्यूनिस्ट) भी हो जाएगा। भारत में पुलिस में मुसलमान हैं, जज भी मुसलमान हैं, प्रेसीडेन्ट भी मुसलमान रहे हैं। यह भी कल्पना मुहम्मद न कर सके कि ये मुसलमान होकर भी एक दूसरी तरह सोचेंगे (या गैर–मुस्लिमों की तरह सोचेंगे) और कार्य करेंगे। मुहम्मद यह भी नहीं सोच पाये कि प्रजातंत्र में मुसलमान रहते हुए भी शरीयत को मानने तथा इसके अनुसार कार्य करने से इंकार कर देंगे। इस स्थिति में कुरान कोई मार्गदर्शन नहीं करती। इसका कारण यह है कि ऐसी कोई

शेष पृष्ठ 11 पर

बयान पर विवाद या कटु सत्य पर प्रहार

विनोद बंसल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उत्तर प्रदेश के फतेहपुर की एक रैली में यह कहा जाना कि अगर किसी गांव को कब्रगाह के निर्माण के लिए कोष मिलता है, तो उस गांव को श्मशान की जमीन के लिए भी कोष मिलना चाहिए. गांव में कब्रिस्तान बनतां है तो श्मशान भी बनना चाहिए। अगर आप ईद में बिजली की आपूर्ति निर्बाध करते हैं, तो आपको दीपावाली में भी बिजली की आपूर्ति निर्बाध करनी चाहि। यानि, भेदभाव नहीं होना चाहिए।

भाजपा सांसद साक्षी महाराज द्वारा यह कहा जाना कि "चाहे नाम कब्रिस्तान हो, चाहे नाम श्मशान हो, दाह होना चाहिए। किसी को गाड़ने की आवश्यकता नहीं है।" गाड़ने से देश में जगह की कमी पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि "२–२.५ करोड़ साधु हैं सबकी समाधि लगे, कितनी जमीन जाएगी। २० करोड़ मुस्लिम हैं सबको कब्र चाहिए हिंदुस्तान में जगह कहां मिलेगी।" अगर सबको दफनाते रहे तो देश में खेती के लिए जगह कहां से आएगी, सत्य ही तो है। इसके अलावा उनका मुसलमानों और ईसाइयों की नसबंदी सम्बन्धी बयान हो या हिन्दुओं द्वारा चार बच्चे पैदा करने की बात हो, चार बीवी और ४० बच्चों का मामला हो या गौ रक्षार्थ मरने या मारने की बात, राम जन्म भूमि पर मंदिर की मांग हो या कुछ अन्य, आखिर हिन्दुओं के अधिकारों या सामान नागरिक कानून की बात में विवाद कैसा? उपरोक्त बयानों पर सारा विपक्ष तथा समस्त सैक्यूलरिस्ट ब्रिगेड बौखला गया तथा एक जुट होकर गत एक सप्ताह से लगातार केंद्र में सत्ता धारी पार्टी के पीछे चून बाँध के पडा है। किन्तु दूसरी ओर जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्य मंत्री व केन्द्रीय मंत्री रहे फारुख अब्दुल्ला चाहे देश को तोड़ने बाले बयान दें या उन्ही की विचारधारा के पोषक दिल्ली के पर्यावरण मंत्री इमरान हुसैन हिन्दुओं के अंतिम संस्कार में लकड़ियों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने की सिफारिश करें या बिहार सरकार घरों में आग के खतरे के कारण हिन्दुओं के सर्वोत्तम धार्मिक कार्य यज्ञ हवन पर प्रतिबन्ध लगाने की बात करें तो ये सभी सैक्यूलरिस्ट मानो बिल में घुस जाते हैं। इतना ही नहीं, यदि कोई भारत माता के टुकडे करने या कश्मीर की आजादी के नारे लगाए तो ये सभी एक होकर उन देश द्रोहियों के तलवे चाटने लग जाते हैं। आओ! अब उपरोक्त बयानों की हकीकत की भी पड़ताल करते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने मुस्लिमों के लिए कब्रिस्तानों के निर्माण पर जहां १३०० करोड़ रूपए खर्च किए वहीं समस्त गैर मुस्लिमों के श्मशान हेतु मात्र ६३७ करोड़ रूपए ही आबंटित किए गए। यह सर्व विदित है कि ईद व रमजान पर खास सख्ती के साथ बिजली की शत–प्रतिशत आपूर्ति सुनिश्चित की जाती है वहीं दीपावली पर बिजली व होली पर पानी की भारी किल्लत देखने को मिलती है। इतना ही नहीं, इन हिन्दू त्योहारों पर अधिकांश सैक्यूलरिस्टों के दिमाग में विविध प्रकार के प्रर्यावरण प्रदूषण का खतरा भी मंडराता रहता है जबकि वहीं बकरीद व क्रिसमस पर इन्हें चहुँ ओर पर्यावरण की स्वच्छता नजर आने लगती है। जहां तक जनसंख्या असंतुलन की बात करें तो अकेले उत्तर प्रदेश को ही ले लो। समस्त भारत में मुस्लिम कुल जनसंख्या के १६.३ प्रतिशत हैं। वहीं, उत्तर प्रदेश की शहरी आबादी में इनका प्रतिशत ३७.२ है। यानि, अखिल भारतीय औसत का दुगना। प्रदेश में मुस्लिम बहुलता वाले कस्बों की संख्या जहां १६८१ में १०१ थी वही संख्या २०१६ में बढ़ कर लगभग ढाई गुनी यानि २३१ हो गई। १५ कस्बों में इनकी आबादी ६० प्रतिशत से अधिक तथा ८४ कस्बों में ७० से ६० प्रतिशत के बीच पहुँच गई है। मात्र आंकड़े भयावह नहीं बल्कि वह सोच विचारणीय है जिसके कारण मुस्लिम बाहुल्य गाँव, कस्बों व शहरों में हिन्दू समाज दमन का शिकार बन धर्मातरंण, लव जिहाद व पलायन को मजबूर है।

अब बात करते हैं अंतिम संस्कार की पद्धतियाँ और उनसे उपजी समस्याओं की. यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के १३ मन्त्रों में अंतिम संस्कार की विशुद्ध वैज्ञानिक वैदिक पद्धति का स्पष्ट वर्णन है। जिसके तहत शव को गाढ़ने, बहाने या जंगल में छोड़ने के विपरीत समस्त मानव जाति के लिए वैदिक यज्ञ विधि से किए गए अग्नि दाह को ही पूर्णतया वैज्ञानिक, प्रदूषण रहित पुण्य कर्म माना गया है। जो लोग इस वेदवाणी से अनभिज्ञ हों या नहीं मानते हों उन्हें भी यह बात तो समझनी ही पड़ेगी कि जब आगामी कुछ वर्षों में भारत दुनिया की सर्वाधिक मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा, उन सब के लिए कब्रिस्तान हेतु जमीन कहाँ से लाएगा। दुनिया के अन्य देशों में भी झाँके तो कहने को तो इंसान को दफनाने में सिर्फ दो गज जमीन लगती है। लेकिन हालत ये है कि कई देशों में दफनाने के लिए वेटिंग लिस्ट तैयार होने लगी है। एबीपी न्यूज की एक रिपोर्ट के अनुसार एक रिसर्च में ये भी सामने आया कि हांगकांग में मर चुके लोगों की समाधि बनाने के लिए ५ साल की वेटिंग चल रही है। यहाँ जगह की कमी के कारण १६७० के बाद से नए कब्रिस्तान नहीं बन रहे हैं। आप दुनिया की सारी दौलत देकर भी स्थाई कब्र की जगह नहीं ले सकते हैं। अगले २४ साल में अमेरिका को लास वेगस के बराबर की जमीन चाहिए होगी। फिलीपींस की राजधानी मनीला में जगह की कमी के कारण कब्रिस्तान के ऊपर ही घर बनाने पड़ रहे हैं। मनीला में कब्र का किराया ५ साल बाद नहीं दिया तो वो जगह किसी और को दे दी जा रही है। जापान में कब्रिस्तान की कमी के कारण इंतजार करना पड़ता है तो लोगों को तब तक शव रखने के लिए एक होटल अपनी सर्विस देता है। अब भारत में भी मान्यताओं के मुताबिक अंतिम संस्कार के लिए कई नियम बदले जा रहे हैं। मुंबई की तरह देश में और भी कई जगहें ऐसी हैं, जहां कब्रिस्तान की कमी के कारण मान्यताओं में बदलाव खुद धर्मगुरु ला रहे हैं। जैसे छत्तीसगढ़ में ईसाई धर्मगुरुओं ने दफनाने की जगह दाह संस्कार का भी नया रास्ता खोला है। कई चर्च में रविवार की प्रार्थना के बाद इसकी बकायदा जानकारी भी दी जा रही है।

इंटरनेशनल क्रिमेशन स्टेटिस्टिक्स के मुताबिक दुनिया के कई देशों में शवों को दफनाने की जगह जलाने का प्रचलन बढ़ा है। अमेरिका में १६६० में जहां दाह संस्कार करने वाले सिर्फ ३.८ फीसदी थे, उसी अमेरिका में २०१५ में ४६ फीसदी लोगों ने अंतिम संस्कार के लिए दफनाने की जगह दाह संस्कार की प्रथा को अपनाया। कनाडा में १६७० में जहां शवों को जलाकर अंतिम कर्म क्रिया करने वाले ५.८६ प्रतिशत थे। अब कनाडा में दाह संस्कार करने वाले ६८.४ फीसदी हो चुके हैं। चीन में भी ४६ फीसदी लोग अब दाह संस्कार के जरिए अपनों को अंतिम विदाई देने लगे हैं। शवों को दफनाने की जगह जलाने के पीछे एक बड़ी वजह अगर कब्रिस्तान में जगह की कमी है तो दूसरी बड़ी वजह आर्थिक भी है। अमेरिका जैसे देश में शवों को दफनाने पर जहां कुल खर्च ५ लाख ५६ हजार रुपए आता है। वहीं शव को जलाकर अंतिम संस्कार का खर्च सिर्फ २ लाख १३ हजार रुपए ही होता है। पूरी दुनिया के भ्रमण का जब सार यही निकलता है कि वैदिक रीति से किया गया अग्निदाह ही संसार के लिए लाभकारी है तो इसमें विवाद कैसा और उसमें देरी क्यों. इससे पहले कि देशवासियों की कृषि, निवास, आफिस और उद्योगों हेतु भूमि की पर्याप्तता का संकट पैदा हो, छुद्र राजनैतिक व साम्प्रदायिक सोच से ऊपर उठ कर इसका समय रहते समाधान निकाला जाना नितांत आवश्यक है। इसके साथ ही कुछ चुनिन्दा नेताओं के हर बयान में विवाद के दर्शन करने वालों को बयानों के पीछे छुपे कटु सत्य पर प्रहार से भी बाज आना चाहिए।

माँ

माँ, भोर की लालिमा, उषा का श्रृंगार है:
माँ, क्षमा की प्रतिमूर्ति, माँ पावन उद्गार है।
माँ का हृदय सागर से गहरा है
माँ के समक्ष आकाश कब ठहरा है।
अनन्त है, अभेद्य अविजित है माँ:
शास्त्रों में, सर्वत्र चर्चित है माँ।
धन की, दौलत की भूखी नहीं होती माँ:
स्वभाव से कभी भी रूखी नहीं होती माँ।
दर्द की पीड़ा के कभी नहीं रोती माँ।
तेज–ज्वर के ताप से प्रतिपल कराहती:
शून्य की ओर निरन्तर निहारती:
अचेतः सी, निर्जीव –सी
जीर्ण–शीर्ण सी पड़ी है माँ:
जीवन के अस्सी वसन्त देख चुकी
निडर, निर्भीक
दुःख–दर्दों से लड़ी है माँ।
मैंने पूछा "बहुत कष्ट है?"
'न' में सिर हिलाकर कहा उसने
"कष्ट किस बात का
जीवन के अन्त का अब पूरा एहसास है:
यह क्या कम है
कि इस अवस्था में भी
मेरा बेटा
अब तक मेरे पास है।"

प्रमोद लायटू

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

आडवाणी राष्ट्रपति, जोशी उपराष्ट्रपति बनें, उमा भारती, कल्याण सिंह को त्याग पत्र देने की आवश्यकता नहीं-हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा अध्यक्ष अमित शाह से लालकृष्ण आडवाणी को राष्ट्रपति एवं मुरली मनोहर जोशी को उपराष्ट्रपति बनाने की मांग की है। श्री शर्मा ने कहा है कि आडवाणी व जोशी देश के शीर्षस्थ राजनैतिक नेता होने के साथ–साथ राष्ट्रवादी व हिन्दूवादी विचारों के धनी हैं। अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि मंदिर आंदोलन के नायक भी हैं। उन्होंने राम मंदिर आंदोलन में अपने प्रयासों से भाजपा को दो सीटों से सत्ता तक पहुंचाया है। गृह मंत्री व मानव संसाधन विकास मंत्री रहकर उन्होंने देश के लिये बड़ा कार्य किया है। पिछले कई वर्षों से बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में उन्हें फंसाने का प्रयास चलता रहा है। परन्तु दोनों ही निर्दोष हैं। उन्होंने कोई गलत कार्य नहीं किया है। बाबरी मस्जिद तो हिन्दुस्तान के लिये कलंक था। कार सेवकों ने उसे तोड़कर रामलला को मुक्त कराया तथा देश के सबसे बडे कलंक को समाप्त कर दिया था। आडवाणी, जोशी, उमा भारती, कल्याणं सिंह सहित कारसेवा में सम्मिलित होने वाले सभी लोग देश के नायक हैं। हिन्दू महासभा को उन पर गर्व है। इसके साथ–साथ आडवाणी व जोशी को राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति बनाने में कोई कानूनी अड़चन नहीं है। उच्चतम न्यायालय ने तो केवल ट्रायल का निर्देश दिया है। उन्हें देश के सर्वोच्च पद पर निर्वाचित करने से राम मंदिर के आंदोलनकारियों व कारसेवकों को सम्मान मिलेगा। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री शर्मा ने कहा कि महासभा आडवाणी व जोशी का पूरा सहयोग व समर्थन करेगी। इसके साथ–साथ श्री शर्मा ने कहा कि केन्द्रीय मंत्री उमा भारती व राज्यपाल कल्याण सिंह को नैतिकता के आधार पर त्याग पत्र देने की कोई जरूरत नहीं है। वे लोग पूर्णतः निर्दोष हैं।

शेष पृष्ठ 2 का

'गंगाजल' पीजिए और स्वस्थ....

शंकर की जटा से निकलती है या यों कहें हिमाचल पर्वत से जब यह गंगा निकलती है, तब यह न जाने कितने पहाड़ों से होकर, जहाँ रास्ते में तरह–तरह के आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी एवं संसाधन से होते हुए गुजरती है, जो इस 'गंगा जल' में घुल–मिल कर विलीन हो जाते हैं। जिसमें आदमी को निरोग एवं स्वस्थ रखने की पूरी क्षमता होती है। वैसे 'गंगा जल' में स्वस्थ रखने का अपना अलग गुण विद्यमान होता है। 'गंगा जल' आदमी के शरीर को निरोग एवं स्वस्थ तो रखता ही है, इसके साथ–साथ इस नदी के किनारे खेत–खलिहान को भी, यह पूरी तरह से उर्वरक एवं उपजाऊ बना देता है, जिससे खेत की फसल लहलहा उठती है। इस कारण आप मात्र थोड़े से साधन से ही, अच्छी तरह से फसल उगा लेते हैं। फिर इसके जल से उपजे हुए अनाज, फल और सब्जी को जब आप खाते हैं तो आपको लगता है कि आप कोई पौष्टिक शुद्ध एवं अच्छी चीज खा रहे हैं लेकिन अन्य नदियों के जल से, ऐसा स्वाद एवं पौष्टिक बात देखने को नहीं मिलती है। फिर आप जैसा खाएँगे, वैसा ही आपका मन–मस्तिष्क होगा। आप अच्छा खाएँगे तो आपके जीवन–चरित्र में भी उन्नति होगी और आपका सम्पूर्ण विकास होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में चार–चाँद लग जाएँगे। इसलिए आज आप प्रायः यह देखते होंगे कि 'गंगा नदी' के किनारे रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ एवं निरोग होता है। यह झलक उत्तर प्रदेश के रहने वाले लोगों में ज्यादा दिखलाई पड़ती है, क्योंकि वे लोग इसी नदी के किनारे जो रहते हैं।

निष्कर्षत् लेखक का यही कहना है कि जिस तरह बच्चों के लिए 'माँ का दूध' श्रेष्ठ होता है, उसी तरह से आदमी के स्वास्थ्य के लिए 'गंगा जल' भी पीना फायदेमंद एवं श्रेष्ठतर है। फिर जब प्रकृति ने इस तरह की प्राकृतिक चीज मानव को स्वस्थ रहने के लिए अपार सम्पत्ति दी है, तो मानव क्यों नहीं, इसका उपभोग करता है? इसे जरूर उपयोग करना चाहिए। फिर दुनिया में स्वास्थ्य से बढ़कर कोई भी चीज नहीं है। यह है तो धन है अर्थात् स्वास्थ्य ही धन है। यह एक बार चला जाता है तो फिर आप उस आदमी को कितनी भी दवाई कराएँ, वैसा स्वास्थ्य उसका पुनः नहीं लौट पाता है। इसलिए समय रहते आदमी क्यों नहीं इस बात को सोचता है? अंततः लेखक का यही कहना है कि 'गंगा जल' दुनिया के हर जल से श्रेष्ठ है। ऐसा पवित्र जल विश्व में कहीं भी नहीं है और न होगा। इसलिए इसे मात्र साधारण जल न समझकर, इसे अमृत की तरह समझना चाहिए। क्योंकि यह आपके स्वास्थ्य को भी बनाए रखने में पूरी तरह देख–रेख करता है अर्थात् 'गंगा जल' मानव के लिए हर तरह से स्वास्थ्यवर्द्धक एवं लाभप्रद है।

जरा फिर सोचिए और स्वयं इन प्रश्नों के उत्तर खोजिए...

1. विश्व में लगभग 52 मुस्लिम देश है, एक मुस्लिम देश का नाम बतायें जो हज के लिए सब्सिडी देता हो?
2. एक मुस्लिम देश बताईये जहाँ हिन्दुओं के लिए विशेष कानून है। जैसे कि भारत मे मुसलमानों के लिए है?
3. किसी एक देश का नाम बताईये, जहाँ 85% बहुसंख्यकों को "याचना" करनी पड़ती है, 15% अल्पसख्यकों को संतुष्ट करने के लिए?
4. एक मुस्लिम देश का नाम बताइये, जहाँ का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री गैर–मुस्लिम है?
5. किसी 'मुल्ला" या "मौलवी" का नाम बताइये, जिसने आतंकवादियों के खिलाफ फतवा जारी किया हो?
6. महाराष्ट्र, बिहार, केरल जैसे हिन्दू बहुल राज्यों में मुस्लिम मुख्यमंत्री हो चुके हैं, क्या आप कल्पना कर सकते है कि मुस्लिम बहुल राज्य "कश्मीर" में कोई हिन्दू मुख्यमंत्री हो सकता है?
7. 1947 में आजादी के दौरान पाकिस्तान में हिन्दू जनसंख्या 24% थी अब वह घटकर 1.7 प्रतिशत रह गई है, उस समय तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब आज का अहसान फरामोश बांग्लादेश) में हिन्दू जनसंख्या 30% थी जो अब 7% से भी कम हो गई है। क्या हुआ गुमशुदा हिन्दुओं का? क्या वहाँ (और यहाँ भी) हिन्दुओं के कोई मानवाधिकार है?
8. इस दौरान भारत में मुस्लिम जनसंख्या कट्टरवादी है?
9. यदि हिन्दू असहिष्णु हैं तो कैसे हमारे यहाँ मुस्लिम सड़कों पर नमाज पढ़ते रहते हैं? लाउडस्पीकर पर दिन भर चिल्लाते रहते हैं कि "अल्लाह के सिवाय" और कोई शक्ति नहीं है"?
10. सोमनाथ मन्दिर के जोर्णोद्धार के लिए देश के पैसे का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए ऐसा गाँधीजी ने कहा था, लेकिन 1948 में ही दिल्ली की मस्जिदों को सरकारी मदद से बनवाने के लिए उन्होंने नेहरू और पटेल पर दबाव बनाया, क्यों?
11. कश्मीर, नागालैण्ड अरूणाचल प्रदेश, मेघालय आदि में हिन्दू अल्पसंख्यक है, क्या उन्हें विशेष सुविधा मिलती है?
12. हज करने के लिए सब्सिडी मिलती है जबकि मानसरोवर और अमरनाथ जाने पर टैक्स देना पड़ता है, क्यों?
13. मदरसे और क्रिश्चियन स्कूल अपने–अपने स्कूलों में बाईबल और कुरान पढ़ा सकते हैं तो फिर सरस्वती शिशु मन्दिर में और बाकी स्कूलों में गीता और रामायण क्यों नही पढ़ाई जा सकती?
14. गोधरा के बाद मीडिया मे जो हंगामा बरपा, वैसा हंगामा कश्मीर के चार लाख हिन्दुओं की मौत और पलायन पर क्यों नहीं होता?

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

सैनिकों के सिर काटने पर....

बताया है कि ऐसे घृणित और अमानवीय कार्य सभ्यता के मानकों से परे हैं और इसकी कड़े शब्दों में निंदा की जानी चाहिए। उल्लेखनीय है कि एक मई को पाकिस्तान की बार्डर एक्शन टीम बीएटी ने जम्मू कश्मीर के पुंछ क्षेत्र में २५० मीटर भीतर घुसकर नायब सूबेदार परमजीत सिंह और बीएसएफ के हेड कांस्टेबल प्रेम सागर की हत्या कर दी थी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से कहा है कि आखिर भारत सरकार कब तक चुप रहेगी। हमें पाकिस्तान को करारा जवाब देना चाहिए। हिन्दू महासभा नेताओ ने श्री मोदी को याद दिलाया है कि आप ने २०१४ के लोकसभा चुनाव से पूर्व पाकिस्तान को सबक सिखाने की बात कही थी। अब चुप क्यों हैं?

शेष पृष्ठ 1 का

सेना ने किया ब्रह्मोस मिसाइल......

प्रक्षेपण किया गया है और भूमि पर हमला करने के मामले में इसकी श्रेणी के किसी अन्य हथियार ने अभी तक यह अविश्वसनीय उपलब्धि हासिल नहीं की है। वर्ष २००७ में ब्रह्मोस को अपनाने वाली दुनिया की पहली थल सेना की उपलब्धि पाने वाली भारतीय सेना इस दुर्जेय हथियार की कई अन्य श्रेणियों को विकसित कर चुकी है। इस मिसाइल को संयुक्त रूप से भारत के डीआरडीओ और रूस के एनपीओएम द्वारा विकसित किया गया है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय सेना व वैज्ञानिकों को बधाई दी है तथा केन्द्र सरकार से सेना व वैज्ञानिकों को पूर्ण सहयोग करने की मांग की है।

शेष पृष्ठ 5 का

परब्रह्म श्रीकृष्ण नाम के......

नाम के अर्थों की कोई निश्चित सीमा नहीं है। भगवान के भक्त अपनी-अपनी मान्यताओं, कल्पनाओं एवं उदभावनाओं के अनुसार श्रीकृष्ण नाम के विचित्र अर्थों की अभिव्यक्ति निरन्तर अभिनव रूपों में अनादिकाल से करते रहे हैं और भविष्य में करते रहेंगे। यहाँ पर कुछ शास्त्रज्ञों के अनुसार व्यक्त श्री कृष्ण नाम के अर्थों को संजोकर प्रस्तुत करने का प्रयास मात्र ही किया गया है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न हो सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का

मुस्लिम शरीयत में परिवर्तन......

स्थिति भी मुहम्मद के जीवनकाल या प्रथम ४ (वास्तव में ५) खलीफाओं के समय में नहीं रही। ऐसी स्थिति प्रथम बार ११०० ई. में आई, जब क्रूसेड धर्मयुद्धों में ईसाइयों ने जैरूसलम शहर एवं उसके आसपास के एक बड़े मुस्लिम बहुल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। लगभग सभी मुसलमान कत्ल कर दिये गये तथा जो बचे, वह चुप रहे। फिर दूसरी स्थिति इतिहास में १२५८ ई. में आई, जब समनियाँ बौद्ध हलाकू खान मंगोल ने बगदाद तक मुसलमानों का सफाया कर दिया तथा बगदाद के खलीफा मुस्तकीम को भी कत्ल कर दिया। खिलाफत की संस्था ही समाप्त हो गई, फिर तीसरी स्थिति स्पेन में १४६४ ई. में आई जब रानी ईसाबेला ने स्पेन में ७५० वर्षों के इस्लामी शासन एवं खलीफा को समाप्त कर दिया, सब मुसलमानों को मरवा डाला, स्पेन से भगा दिया या ईसाई बना लिया और जो थोड़े बहुत बचे वे गुलाम बना लिये गये। अब तो विश्व के सारे देशों के प्रजातंत्र, मुख्य रूप से भारत, शरीयत के 'छानने-फटकने' का एक परीक्षण-स्थल बन गये। (शरीयत को 'छानने-फटकने' का शब्द बातचीत में एक मुस्लिम बुद्धिजीवी ने प्रयोग किया)।

(२) भारत सरकार की प्रजातांत्रिक व्यवस्था के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता एवं वफादारी दिखाई जा सकती है कि यह मुसलमानों को सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था प्रदान कर रही है, समान नागरिकता के अधिकार दे रही है। यही नहीं, अल्पसंख्यक होने के नाते मुसलमानों को कुछ विशेष अधिकार भी प्राप्त हैं।

(३) शरीयत के सम्पूर्ण नियमों का पालन नहीं हो रहा है और स्वयं मुसलमानों ने ही उसके नियमों का व्यवहार में लाना बंद कर दिया है। ऐसी कोई धार्मिक सत्ता (उलेमा, खलीफा, इमाम इत्यादि) इस स्थिति में नहीं हैं, जो मुसलमानों से इसका पालन करवा सके। आधी-अधूरी शरीयत को कट्टरपंथी अपनी-अपनी तरह से लागू करने का प्रयास कर रहे हैं।

(४) 'तुम में से जो सत्ता में हैं उनकी आज्ञा पालन करो' ऐसा कह कर शरीयत ने बहुत कुछ समयानुसार परिवर्तन की भी आज्ञा दे दी है। **भारतीय संविधान के नियम इस तरह शरीयत के नियम बन जाते हैं, जिनका पालन करना प्रत्येक मुसलमान का फर्ज (कर्तव्य) बन जाता है।**

(५) भारतीय शासन एवं संविधान के प्रति आज्ञाकारिता एवं वफादारी आज की आवश्यकता बन गई है और इसके बिना मुसलमानों का सामान्य रूप से जीवन भी नहीं चल सकता।

(६) शायद अल्लाह ने 'अपने लोगों' (मुसलमानों) की कमियाँ जानते हुए ही यह आयत दी-"और अल्लाह किसी पर उससे अधिक बोझ नहीं डालता जितना कि वह उठा सकता है।" इसका तात्पर्य यही है कि वक्त और शरीयत की कठिनाइयों को देखते हुए जितना भी तुम इसका पालन कर सकते हो, वह पर्याप्त है। मुहम्मद की दूसरी हदीस भी है कि मुहम्मद ने मुसलमानों से कहा "...एक वक्त ऐसा आयेगा जब तुम शरीयत के दसवें भाग का भी पालन करोगे तो मुक्ति प्राप्त करोगे।" अब वह वक्त आ गया है कि मुसलमान शरीयत के दसवें भाग का पालन करके भी इसे पर्याप्त समझें, यह पूर्णरूपेण कुरान सम्मत है।

(७) ऐसा भी नहीं हो सकता कि जो मुसलमान भारत को 'दारूल हरब' समझते हैं, वे स्वेच्छा से चाहें तो किसी 'दारूल इस्लाम' देश में 'हिजरत' करके चले जायें। भारत विभाजन १९४७ वाली स्थिति इससे अलग है। भारत विभाजन के समय जो मुसलमान मुहाजिर पाकिस्तान गये, उन्हें ही वहाँ सच्चे इस्लाम के नाम पर कत्ल किया जा रहा है और वे उल्टे भाग-भाग कर इसी काफिर मुल्क 'दारूल हरब' भारत में आ रहे हैं। शिया, कादियानी, खोजे, बहौरे सबको पाकिस्तान में कयामत और दोजख का वर्णन अपनी आँखों से देखने और भुगतने को मिल रहा है, जिसका वर्णन कुरान में बड़े विस्तार से किया गया है और जिसकी तारीख के बारे में लिखा है कि यह 'केवल अल्लाह को ही मालूम है।' यह कयामत और जलजला बिना तुरही बजे पाकिस्तान में उसी दिन से आ चुका है, जब वह बना। पाकिस्तान बताया जा रहा है कि केवल सुन्नी ही सच्चे मुसलमान हैं, बाकी सब मुसलमान जिनमें शिया और कादियानी भी सम्मिलित हैं काफिर और दहरिये हैं, जिनके कत्ल करने की इजाजत शरीयत देती है।

(शेष अगले अंक में)

दिनांक 24 मई से 30 मई 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
अमावस्या	**25 मई**	वीरवार
वीर सावरकर जयंती	**28 मई**	रविवार
महाराणा प्रताप जयंती	**28 मई**	रविवार
पंचमी	**30 मई**	मंगलवार

यह भी सच है

इस फिल्म के बाद से इंग्लिश के बजाय लोग अपनी स्थानीय भाषा को महत्त्व देने लगेंगे-अर्जुन कपूर

बालीवुड अभिनेता अर्जुन कपूर की फिल्म हाफ गर्लफ्रेंड का ट्रेलर रिलीज हो गया है। इस फिल्म में अर्जुन एक बिहारी लड़के के किरदार में है, जिसका हाथ अंग्रेजी में टाइट हैं। ऐसे में फिल्म के ट्रेलर लॉन्च पर अर्जुन ने कहा कि इस फिल्म के बाद से इंग्लिश के बजाये लोग अपनी स्थानीय भाषा को महत्त्व देने लगेंगे। अर्जुन ने आगे कहा हमारे देश में यह नहीं देखा जाता कि आप कितने ज्ञानी है। बस अगर आपको अंग्रेजी बोलना नहीं आती है तो आपको तुच्छ समझा जाता है। यह काफी शर्मनाक है। अर्जुन ने कहा कि अंग्रेजी जानना अच्छी बात है, लेकिन हमें अपनी भाषा को बोलने में शर्मिंदगी क्यों महसूस हो रही है। और आखिर लोग इस कारण आपके प्रति अपनी राय बनाते है। आपको बता दे कि इस फिल्म में एक बिहार के लड़के का हिन्दी भाषा होकर एक अंग्रेजी माध्यम के कालेज में प्रवेश का भाषागत संघर्ष को दिखाया गया है। आपको बता दे कि फिल्म हाफ गर्लफ्रेंड में अर्जुन कपूर के साथ में श्रद्धा कपूर नजर आयंगी। मोहित सूरी के निर्देशन में बनी फिल्म हाफ गर्लफ्रेंड चेतन भगत के उपन्यास पर आधारित है। फिल्म १६ मई को रिलीज होगी।

प्रवीण कुमार जैन

कलंकित होती मानवता

इस्लाम में मदरसा शिक्षा प्रायः अनिवार्य नहीं परंतु आवश्यक अवश्य बनी हुई है। जिससे धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा मिलने से समाज मे अलगाववाद की भावना बढ़ती जा रही है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विरोध तो मुल्ला–मौलवियों ने आरम्भ में ही किया हुआ है। क्योंकि उनको ऐसा लगता रहा है कि आधुनिक शिक्षा से इस्लाम धर्म से मुसलमान भटक जायेंगे और उनकी आस्थायें प्रभावित होगी। विशेष बात यह है कि अनगिनत निर्दोश लोगो की मौत को कोई भी सभ्य व्यक्ति या समाज स्वीकृति नहीं देता। पर मदरसा शिक्षा प्रणाली मुस्लिम समुदाय के अपरिपक्व बचपन को तोते की तरह रटा–रटा कर उसमें काफिर के प्रति इतनी अधिक नफरत भर देता है कि वह जन्नत की हूरो के लालच में उनका सर्वनाश करने को उद्वेलित हो जाता है। जैश–ए–मोहम्मद का मुखिया मौलाना मसूद अजहर के विषय में तो यहा तक कहा गया था कि वह १५ मिनट में जिहाद के लिए फिदायीन तक तैयार कर देता है। परिणाम स्वरुप आज विश्व में धर्म के नाम पर बार बार निर्दोशो का बहने वाला लहू सभ्य समाज के लिये भयावह चुनौती है। फिर भी सत्य, अहिंसा व मानवता की बात करने वाले बड़े बड़े बुद्धिजीवी केवल शांति से रहने वाले उदार और सहिष्णु समाज को ही उपदेश देना जानते है। क्यों नहीं कोई मानवतावादी बुद्धिजीवी, मुस्लिम समाज की कट्टरता व असहिष्णुता को चुनौती देता? क्यों नहीं कोई मदरसा शिक्षा प्रणाली के स्थान पर आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता के प्रति मुस्लिम समाज को प्रेरित करता? क्या इस्लामी विद्याओं में आवश्यक परिवर्तन करवाने का कभी कोई साहस करेगा? आज जिहाद एक वास्तविकता है और दुनिया इसकी भयानक चपेट में सिसक रही है। ऐसे में सेक्युलर कहे जाने वाले मानवतावादी शान्ति बनाये रखने में कैसे सफल हो सकते है? इस्लामी मानसिकता के जहरीले जनून से भरे जिहादियों के सामने शान्ति का प्रस्ताव किसी मूर्खता से कम नहीं। भारत के साथ साथ विश्व के समस्त राजनीतिज्ञो व बुद्धिजीवियों को चिंतन करना होगा कि कौन समाज मिलजुल कर सहिष्णुता के साथ अहिंसक तरीके से रहना चाहता है और कौन कट्टरता के कारण असहिष्णु व हिंसक व्यवहार करने में विश्वास करता है। धार्मिक श्रेष्ठता की होड़ में निर्दोश व मासूमो का नरसंहार आखिर कब तक मानवता को कलंकित करता रहेगा?

विनोद कुमार सर्वोदय

कबिरा खड़ा बजार में

अब राजा बनाने का सपना दिखा रही केंद्र

अब बिल्डरों की खैर नहीं। ग्राहक होगा राजा। रियल एस्टेट के कारोबार में मनमानी पर लगेगी लगाम। ऐसे कुछ जुमले पहली मई को समाचारों में खूब सुनने मिले। तीन साल पहले इसी तरह अप्रैल–मई के माह में अच्छे दिन आने वाले हैं का खूब शोर हुआ था। आज के मीडिया का काम ही मानो शोर मचाना हो गया है। रियल एस्टेट यानी जमीन की खरीद–फरोख्त और इमारतें बनाने के कारोबार में अरबपति बनने वाले चतुर–सुजान लोगों ने किस–किस तरह के छल–कपटों का इस्तेमाल किया, यह देश ने पिछले दो दशकों में खूब देखा है। इस काम में राजनीतिक दलों का सहयोग व्यापारियों को मिला ही, सरकार और प्रशासन भी इसमें खूब भागीदार बने। पहले अपने मकान का सपना लोगों को दिखाया जाता, फिर उन्हें कर्ज पर रकम लेने की राह बताई जाती और बदले में सालों–साल गृहप्रवेश के लिए इंतजार करवाया जाता। जब आदमी ईएमआई का बोझ लेकर अपने घर में जाता, तो उसे पता चलता कि जो वादे उससे रकम लेते वक्त किए गए थे, उनमें से अधिकतर झूठे थे, भ्रामक थे। यह विडंबना ही है कि इस तरह की कई धोखाधड़ियों के बावजूद भारत में रियल एस्टेट का कारोबार दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करता रहा। आंकड़ों के मुताबिक देश में इस वक्त ७६ हजार रियल एस्टेट कंपनियां हैं और हर साल १० लाख लोग मकान खरीदते हैं। एक अनुमान के मुताबिक २०११–१५ में हर साल २,३४६ से ४,४८८ प्राजेक्ट लॉन्च हुए और २०११–१५ में १३.७० लाख करोड़ का निवेश हुआ। वहीं २०११–१५ में २७ शहरों में १७,५२६ प्राजेक्ट लान्च किए गए। लाखों करोड़ों के इस कारोबार में अब तक फरेब इसलिए होता रहा कि कोई एक स्पष्ट कानून इसके लिए नहीं बना था। लेकिन १ मई से रियल एस्टेट कानून यानी रेरा लागू हो गया है। सरकार के मुताबिक यह कानून मकान खरीदारों के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया है। साल २०१६ में संसद में पास हुए रियल एस्टेट नियमन एवं विकास अधिनियम २०१६ की सभी ६२ धाराएं इस कानून के बनने से प्रभावी हो गई हैं। सरकार के मुताबिक यह कानून के क्रियान्वयन के एक ऐसे युग की शुरूआत है जहां खरीदार बाजार का बादशाह होगा। इस कानून के तहत देश के हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश को अपनी रेगुलेटरी अथॉरिटी बनानी होगी जो कानून के मुताबिक नियम–कानून बनाएगी। रेरा में कहा गया है कि सभी मौजूदा प्राजेक्ट्स का रजिस्ट्रेशन संबंधित राज्यों की रेगुलेटरी अथॉरिटीज में जुलाई २०१७ तक हो जाना चाहिए। रजिस्टर्ड प्राजेक्ट की पूरी जानकारी प्राधिकरण को दी जानी जरूरी है। कानून के तहत अब यह आवश्यक हो गया है कि प्राजेक्ट पूरा होने की तारीख दी जाए, साथ ही अब मकान बनाने वाला बिल्डर, डेवलपर एक प्राजेक्ट का पैसा दूसरे में नहीं लगा सकता। कानून के मुताबिक प्राजेक्ट की बिक्री सुपर एरिया पर नहीं बल्कि कॉरपेट एरिया पर करनी होगी। पजेशन में देरी होने या कंस्ट्रक्शन में दोषी पाए जाने पर बिल्डरों को ब्याज और जुमार्ना दोनों देना होगा। अगर कोई बिल्डर खरीदार के साथ धोखाधड़ी का दोषी पाया जाता है तो उसे तीन साल की सजा का प्रावधान भी संसद द्वारा पास किए कानून में है। खरीदार के साथ कोई धोखाधड़ी नहीं होगी। क्या इसकी गारंटी केंद्र और राज्य सरकारें दे सकती हैं, केवल कानून के बनने से ग्राहक राजा नहीं बन जाएगा, उसकी जागरुकता उसे राजा बनाएगी।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 17 मई से 23 मई 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।